

---

# प्रज्ञान

---

## PRAJÑĀNA

A Peer Review, Multidisciplinary Bilingual Research Journal

---

Volume : IX-X

Issue : 4/2019-20

ISSN : 2278-1609

---

Km. Mayawati Government Girls Post Graduate College  
Badalpur, Gautambudha Nagar (U.P.) - 203 207



# प्रज्ञान PRAJÑĀNA

A Peer Review, Multi Disciplinary Bilingual Research Journal

मुख्य संरक्षक  
निदेशक, उच्च शिक्षा, उ. प्र. इलाहाबाद

संरक्षक  
डॉ. दिव्या नाथ, प्राचार्या

प्रधान सम्पादक  
डॉ. किशोर कुमार

सम्पादक मण्डल  
डॉ. दिनेश चन्द शर्मा  
डॉ. रश्मि कुमारी  
डॉ. दीप्ति वाजपेयी  
डॉ. ममता उपाध्याय



कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय  
बादलपुर-गौतमबुद्ध नगर ( उ.प्र. )

**ISSN : 2278-1609**

**प्रकाशक** : कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर-गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

**मुद्रक** : पारस प्रकाशन, दिल्ली

© कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर-गौतमबुद्ध नगर

**सम्पर्क सूत्र :**

दूरभाष : 0120-2673010

ई-मेल : [journalkmgcbadalpur@gmail.com](mailto:journalkmgcbadalpur@gmail.com)

**सहयोग राशि (Subscription Price)**

एक अंक : 200 रुपये

व्यक्तियों के लिए : वार्षिक 500/-, आजीवन 5000/-

संस्थाओं के लिए : वार्षिक 700/-, आजीवन 7000/-

---

**Note :** Views expressed in the articles belong to the authors; the organizers and publisher are not responsible for them. Also, it is assumed that the articles have not been published earlier and are not being considered for any other journal/Book.

## अनुक्रम

• संरक्षक का संदेश	5
डॉ० दिव्या नाथ प्राचार्या	
• संपादकीय	6
1. पंचायती राज व्यवस्था महिलाएं एवं ग्रामीण विकास	
73 वें संविधान संशोधन के सन्दर्भ में एक समालोचनात्मक अध्ययन	7
डॉ. सरिता शर्मा	
2. समाज में साहित्य की भूमिका	15
डॉ. रश्मि कुमारी	
3. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित दार्शनिक तत्व	19
डॉ. दीप्ति वाजपेयी	
4. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन	24
डॉ. रतन सिंह	
5. हिन्दी सिनेमा: समय, संस्कृति और भाषा	29
डॉ. जीत सिंह	
6. Leadership & Ethics	
Dr. Aparna Sharma	33
7. Indoor Potted Plants : Air Pollution Management System	
Manisha Bhati & V. K. Shanwal	39
8. New Approaches in Education to deal with Sustainable Development	
Dr. Ramakanti	49
9. Globalization And Its Impact On Indian Music	
Dr. Bhagat Singh	58
10. Information Overload as A Major Determinant of Psychological Maladjustment	
Dr. Sanjiv Kumar	63
11. An Important Role of Mathematics in Buisness or Compony	
Jitender Kumar	70
12. Architecture Inspiration And Outfit Designing : An Informative Study	
Vedika & Dr. Surender Kaur	73
13. Ecofeminism : Role of Women in Sustainable Development	
Meenakshi Lohani	79

# NATIONAL EDITORIAL ADVISORY BOARD

**Dr. Bhagwati Prakash Shrama**

Vice Chancellor, Gautam Buddha University, Greater Noida

**Dr. Sanjeev Kumar Sharma**

Vice Chancellor, Central University of Bihar, Motihari, Bihar

**Dr. Anil Kumar Shukla**, Vice Chancellor, Roohelkhand University, Bareilly

**Dr. Arun Mohan Sherry**, Director-IIIT Lucknow & Senior Vice President-HCL Talent Care

**Shri Ashuotosh Bhatnagar**, Director- Jammu Kashmir Study Centre, New Delhi

**Prof. (Dr.) Kumar Ratnam**, Member Secretary- Indian Council of Historical Research, New Delhi

**Dr. Varsha Gupta**, Department of History, Jammu University, Jammu

**Dr. Anita Rani Rathore**, Principal, Govt. Degree College, Gabhana, Aligarh

**Prof. (Dr.) J. D. Agarwal**, Director, IIF College of Commerce & Management Studies, Greater Noida

**Prof. (Dr.) Saurabh Agarwal**, Principal, IIF College of Commerce & Management Studies, Greater Noida

**Dr. Vinod Kumar Shanwal**, HOD- Education & Training Department, G.B. University, Greater Noida

**Shri Prem Chand**, Librarian, Indian Institute of Advanced Studies, Shimla

**Dr. Rakesh Rana**, Associate Professor, Department of Sociology, M. M. H. College, Ghaziabad

**Dr. Anil Kumar Singh**, School of Language, Literature and Culture Studies, JNU New Delhi

**Dr. Arun Kumar Saxena**, Ex. HOD- Zoology, Government Post Graduate College, Rampur

**Dr. Rajesh Kumar**, Associate Professor- Department of History- Aryabhata College, Delhi University, Delhi

**Dr. Vinay Kumar Sharma**, President- Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow

**Dr. Aparna Sharma**, Assistant Professor, Amity Institute of English Studies and Research, Noida

**Dr. Jitendra Kumar Nagar**, Environmentalist, General Secretary-ESDA, New Delhi

**Dr. Arvind K. Yadav**, Asst. Prof., Department of Political Science, Dr.B.R.A. College, Delhi University Delhi

**Ms. Priya Jindal**, Director- Delhi Knowledge Track New Delhi

## संरक्षक की कलम से

अनुसंधान का बीजारोपण वहाँ से होता है, जहाँ से मनुष्य अपनी व्याख्या के संबंध में संदेह प्रकट करना प्रारंभ करता है। विश्लेषण और अवधारणा के विस्तार के माध्यम से अनुसंधान को एक वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जाता है।

आज भारत जैसे विकासशील देश अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं, जिनके समसामयिक निदान खोजना बुद्धजीवियों तथा वैज्ञानिकों का कर्तव्य ही नहीं वरन् नैतिक जिम्मेदारी भी है। इस उद्देश्य के दृष्टिगत महाविद्यालय शोध पत्रिका “प्रज्ञान” का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है एवं संपादक मंडल सहित शोधार्थीगण बधाई के पात्र हैं।

मेरी ओर से प्रज्ञान के सफल प्रकाशन हेतु अनेकों शुभकामनाएं...

डॉ० दिव्या नाथ  
प्राचार्या

## संपादकीय

शोध कार्य अथवा अनुसंधान किसी समस्या अथवा स्थिति के संदर्भ में वस्तुनिष्ठ व तर्कपूर्ण माध्यम से तथ्यों के आलोक में उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज करना है। शोध उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है, जिनका आंशिक एवं पूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूढ़ना होता है। शोध की यह नई रोशनी पुरानी त्रुटियों एवम् भ्रान्त धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में विषय विशेष के ज्ञान कोश में औचित्यपूर्ण वृद्धि करती है। महाविद्यालय का शोध जर्नल प्रज्ञान इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अंतर्विषयक दृष्टिकोण के साथ समाजविज्ञानियों, तकनीकी विद्वानों, शिक्षकों व शोधार्थियों को उनके क्षेत्र विशेष में किये गए शोध कार्यों को एक समुचित मंच प्रदान करता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की शोध में गुणवत्ता की नीति के अंतर्गत प्रज्ञान हेतु प्राप्त शोध पत्रों को विषय विशेषज्ञों को प्रेषित कर उनकी समीक्षा कराई गई तथा समीक्षोपरांत मानक के अनुरूप पाये गए शोध पत्रों का प्रकाशन प्रज्ञान के वर्तमान अंक में किया जा रहा है। यह अंक हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, शिक्षाशास्त्र, संगीत आदि विषयों के नवीन आयामों का प्रतिनिधित्व करता है। निसंदेह गुणवत्तापूर्ण तथा मानक शोध विधि के अनुसार किये गए किसी भी शोध कार्य को किसी प्रमाणीकरण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसका अनुप्रयोग एवं अन्य शोधकर्ताओं द्वारा उसका संज्ञान लेना ही उसका प्रमाणीकरण है किंतु फिर भी महाविद्यालय प्रज्ञान को हर कसौटी पर खरा उतारने की दृष्टि से उसे यूजीसी अनुमोदित सूची में सम्मिलित कराने हेतु प्रयासरत है। भविष्य में हमारा यह भी प्रयास रहेगा कि इस शोध जर्नल को ई-जर्नल / डिजिटल स्वरूप में (E-ISSN) प्रकाशित किया जा सके।

प्रज्ञान की गुणवत्ता संवर्धन की दृष्टि से सभी के सकारात्मक सुझाव आमंत्रित है ।

डॉ० किशोर कुमार  
प्रधान संपादक



# पंचायती राज व्यवस्था महिलाएँ एवं ग्रामीण विकास

## 73 वें संविधान संशोधन के सन्दर्भ में एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. सरिता शर्मा  
असि. प्रो. एवं कार्यवाहक प्राचार्या  
इंग्रहम इंस्टीट्यूट गर्ल्स डिग्री कॉलेज  
गाजियाबाद

### सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ग्रामीण विकास में पंचायती राज व्यवस्था का योगदान स्पष्ट करना एवं महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाना है। शोध पत्र में 73वें संविधान संशोधन के सन्दर्भ में पंचायती राज एवं सामाजिक विकास से सम्बन्धित मूल्यों जैसे समाज कल्याण में ग्राम पंचायतों की उपादेयता एवं महिलाओं की भागीदारी के स्तर को स्पष्ट करना है।

### मुख्य शब्द

पंचायती राज, विकेन्द्रीकरण, ग्राम्य विकास, महिला सहभागिता, लोकतान्त्रिक व्यवस्था।

### प्रस्तावना

राज व्यवस्था के अभिन्न अंश के रूप में भारतवर्ष में पंचायती राज व्यवस्था का इतिहास अति प्राचीन है। यह ऋग्वेद कालीन है। भारत में पंचायती राज व्यवस्था के इतिहास और वर्तमान में इसके विकास का निरूपण किया जाए तो यह अतिशयोक्ति न होगी कि लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त पर आधारित पंचायती राज व्यवस्था, ग्रामीण स्तर पर विकास का पर्याय बन गई है। विकेन्द्रीकरण लोक प्रशासन के संगठन के तत्वों में से एक माना जाता है जिसका अर्थ सत्ता और शक्ति के संगठन की निम्नतम इकाई तक वितरण से अथवा नीचे से ऊपर ही और योजना का निर्माण और संचालन है। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि निम्नतम स्तर पर नीति निर्माण, योजना की संरचना और उसके अनुसार कार्य का सम्पादन सुनिश्चित किया जाए जिसमें स्थानीय नौकरशाही एवं निर्वाचित जन प्रतिनिधियों की भूमिका हो और यह सब स्थानीय स्तर पर पूर्ण स्वतंत्रता के साथ हो। बहुआयामी स्तरों पर योजना का निर्माण विकेन्द्रीकरण का प्रतीक है, यथा- राष्ट्रीय स्तर, प्रखण्डीय स्तर और ग्रामीण स्तर। रजनी कोठारी के अनुसार राष्ट्रीय नेतृत्व का एक दूरदर्शितापूर्ण कार्य था पंचायती राज की स्थापना। इसमें भारतीय राजव्यवस्था का विकेन्द्रीकरण हो रहा है और देश में एक सह स्थानीय संस्था के निर्माण से उनकी एकता भी बढ़ रही है।

कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के द्वारा विकेन्द्रीकरण की दिशा में प्रयास किये गये। सर विश्वेश्वरयया के प्रयास स्मरणीय हैं। स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात भारतीय संविधान निर्मात्री सभा ने राज्य के नीति निर्देशक तत्व अध्याय में विकेन्द्रीकरण एवं पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना की सिफारिश की और प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कृषि के क्षेत्र में ग्रामीण उत्पादक परिषद की संरचना की गई और सामुदायिक विकास प्रखण्ड एवं जनपदीय स्तर पर भी इस प्रकार के प्रयास हुए। वस्तुतः सामुदायिक विकास कार्यक्रम विकेन्द्रित व्यवस्था का एक उत्कृष्ट उदाहरण था जिसका मुख्य आधार जन साधारण की भागीदारी थी। पंचायती राज व्यवस्था को और समृद्ध बनाने के लिए 1957 में बलवन्त राय मेहता समिति से आरम्भ कर 19 वीं संविधान संशोधन अधिनियम, 1993 तक केन्द्रीय व राज्य स्तर पर

निरन्तर पंचायती राज व्यवस्था को विकसित करने के प्रयास किये जाते रहे हैं। इस सन्दर्भ में उल्लिखित है कि समस्त विकास की प्रक्रिया ग्रामीण स्तर से प्रारम्भ होकर तहसील, पंचायत समिति और जनपद के स्तर पर सम्पन्न होती है। प्रान्तीय सरकारें विकास के लिए धन निर्धारित करती हैं जो जनपदीय स्तर से पंचायत समिति और कालान्तर में स्थानीय स्तर तक प्रेषित किये जाते हैं, स्वाभाविक है कि यदि व्यवस्था केन्द्रीकृत होगी तो संसाधनों और धन का दुरुपयोग सुनिश्चित है, अतः धन का दुरुपयोग और विकास की सुनिश्चित के संदर्भ में यह आवश्यक है कि संसाधनों को निम्नतम स्तर अथवा ग्रामों तक पहुँचाया जाना सुनिश्चित किया जाए। उस स्थिति में ही देश के समक्ष गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या विस्तार, कुपोषण स्वास्थ्य जैसी मानवीय समस्याओं से निबटा जा सकता है। मात्र नौकरशाही के द्वारा ही इन समस्याओं का निदान नहीं किया जा सकता है अपितु स्थानीय जन सामान्य का सम्पूर्ण प्रक्रिया में प्रभावी और सक्रिय योगदान होना चाहिए ताकि स्थानीय स्तर के स्रोत का दोहन और उपयोग कर विकास सुनिश्चित किया जा सके। दूसरे स्थानीय स्तर पर कुछ समस्याएँ होती हैं उन्हें स्थानीय स्तर के जनमानस ही ठीक प्रकार समझ सकते हैं तथा उनका निदान कर सकते हैं। इस उद्देश्य से पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना का प्रावधान भारतीय संविधान के अनुच्छेद चालीस के अन्तर्गत किया गया। डेनिस ए. रोडनेली ने विकेन्द्रित व्यवस्था के पक्ष में तर्क देते हुए कहा है कि विकेन्द्रित व्यवस्था समिति साधनों के बेहतर उपयोग के लिए आवश्यक है कि यह कार्य में विलम्ब, लम्बी प्रक्रियाएँ और संसाधनों के दुरुपयोग को रोकने में सक्षम है, साथ ही जन साधारण को अपने स्वयं के विकास की क्रियाओं को सम्बद्ध करने में उनकी प्रभावी सहभागिता सुनिश्चित करने में भी विकेन्द्रित व्यवस्था ही सक्षम हो सकती है। दूसरे शब्दों में यह स्थानीय स्तर पर राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक समन्वय की सुनिश्चितता है जहाँ स्थानीय अभिजात्य जन साधारण को पद-दलित नहीं कर सकता और विकास की प्रत्येक गतिविधि से जुड़े रहने में अक्षम होता है।

पंचायती राज संस्थाएँ जैसी स्थानीय स्वशासन की इकाईयों की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए निस्संदेह रूप से कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र द्वारा स्वतंत्र सरकार की स्थापना सरलता से की जा सकती है, किन्तु बिना स्थानीय स्वशासी संस्थाओं की विधिवत स्थापना किए हुए, नागरिकों में स्वतंत्र चेतना जागृत नहीं की जा सकती है। पंचायती राज जैसी संस्थाएँ ही राज्य और राष्ट्रीय स्तर के नेताओं का प्रशिक्षण स्थल हैं। अतएव कहा जा सकता है कि स्वतंत्र राष्ट्र की शक्ति स्थानीय संस्थाओं में निहित होती है।

### उद्देश्य -

1. ग्रामीण नेतृत्व के प्राकार्यान्वयन जैसे ग्रामीण समस्याओं के समाधान में रुचि कल्याण कार्यों में जनता का सहयोग, क्षेत्र के जन पदाधिकारियों से सम्बन्ध, सरकारी अधिकारियों से सम्बन्ध, ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्राकार्यों का निर्वाह आदि के विषय में तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना।
2. पंचायती राज एवं सामाजिक विकास से सम्बन्धित मूल्यों जैसे समाज कल्याण में ग्राम पंचायतों की उपदेयता, जाति पंचायतों का संगठन, उनकी गतिविधियाँ, गाँव के लिए न्याय, पंचायतों तथा ब्लॉकों की उपादेयता तथा ग्रामीण विकास में महिलाओं की भागीदारी के स्तर पर पता लगाना।

### परिकल्पनाएँ -

1. पंचायती राज व्यवस्था समग्र ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जिससे प्रत्येक स्तर पर जनसहभागिता में वृद्धि हुई है।
2. महिलाओं को पंचायती राज व्यवस्था के शामिल करने में उनकी प्रकृति सशक्तिकरण की ओर

हुई है।

## शोध प्रविधि -

प्रस्तुत शोध, सैद्धान्तिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं नवीन व्यवहारिक पद्धतियों पर आधारित है। अध्ययन हेतु आवश्यक सामग्री, इंटरनेट एवं शोध संस्थानों के अलावा प्राचीन सन्दर्भ ग्रन्थों, विभिन्न आयोगों के प्रकाशनों, आत्मलेखों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, इत्यादि से लेख सामग्री का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

## ग्रामीण विकास में महिलाओं की भागीदारी-

ऐतिहासिक रूप से पंचायतों में महिलाओं की भूमिका के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं है क्योंकि इनमें मुख्यतः पुरुषों का अधिपत्य था। 1952 के सामुदायिक विकास कार्यक्रमों की समीक्षा करने वालों बलवंतराय मेहता समिति ने 1957 में पहली बार महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने के लिए दो महिला सदस्यों के चयन की अनुशंसा की। वर्ष 1961 में बिहार तथा महाराष्ट्र में जिला परिषद एवं पंचायत समिति एकट लागू हुआ। जिसमें मात्र दो महिलाओं ने ही पंचायत चुनाव में नामांकन दाखिल किया, परन्तु उन्हें भी हार का सामना करना पड़ा।

ग्रामीण विकास में महिलाओं के योगदान का सिद्धान्त स्वीकार किये जाने के फलस्वरूप अब बहुत सी गृहणियाँ लोक प्रतिनिधि निर्वाचित हो रही हैं। महिलाएं रोजगार कार्यक्रमों वानिकी कार्यक्रमों, भूसंरक्षण, मत्स्य विकास, रेशम कीट पालन, स्वास्थ्य केन्द्रों और ग्रामीण विद्युतीकरण आदि क्षेत्रों में काम कर रही हैं। महिलाओं के द्वारा ऐसे कामों को पसन्द किया जाता है- जिनका वे बिना किसी मध्यस्थ के पूरा लाभ उठा सकें। पंचायती राज एवं उसमें महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास 72वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1993 के द्वारा किया गया। इस संविधान संशोधन से पंचायतों में महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को बल मिला। इस संशोधन से पूर्व गांवों, कस्बों आदि की अशिक्षित किन्तु योग्य महिलाओं को भी सही स्थान नहीं मिल पा रहा था। महिलाएं योग्य तो होती थीं लेकिन रुढ़िवादी समाज में धीरे-धीरे महिलाओं की स्थिति गिरती चली गयी। दलित और पिछड़े वर्गों की महिलाएं चाहकर भी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती थीं। उनके कानूनी और प्रशासनिक अधिकार शून्य थे। संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायती राज के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं का एक-तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया गया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति की महिलाओं को उनकी जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण प्रदान किया गया। पहली बार एक साथ लगभग 10 लाख से अधिक महिला जन प्रतिनिधि चुनी गई। इस संविधान संशोधन के बाद सबसे ज्यादा खुशी इन्हें ही मिली जो चुनाव लड़कर जन प्रतिनिधि बनने का सामर्थ्य रखती थी, लेकिन सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्हें यह अवसर नहीं मिल पा रहा था। जब उन्हें चुनाव लड़ने का अधिकार मिला तो उसके परिणाम भी सामने आने लगे। इसके बाद इस बात की आवश्यकता समझी गई कि आधी आबादी की बराबरी को दर्जा देने के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की जाये। इसी सोच के साथ वर्ष 2006 में बिहार से आरम्भ हुआ महिलाओं का 50 प्रतिशत आरक्षण देने का अवसर जो विभिन्न राज्यों तक पहुँचा, जिस बाद में बढ़ाकर अन्य राज्यों के द्वारा भी 50 प्रतिशत कर दिया गया। भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार पंचायत स्तर पर महिलाओं को आरक्षण दिये जाने के पश्चात से ही उनकी भागीदारी लगातार बढ़ रही है।

त्रिस्तरीय पंचायती राज में महिलाएं 50 प्रतिशत की आरक्षित सीटों पर चुन कर आ ही रही हैं। यहाँ तक कि महिलाएं सामान्य सीटों पर भी चुनाव जीत कर यह साबित कर रही हैं कि वे किसी

से पीछे नहीं हैं।

मंत्रिमंडल ने पंचायतों की सभी श्रेणियों के लिए आरक्षण को एक-तिहाई से बढ़ाकर कम से कम 50 प्रतिशत करने के लिए भारतीय संविधान में एक अधिकारिक संशोधन (110वां संशोधन) विधेयक, 2009 को पेश करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। संविधान का 110 वां संशोधन विधायक को 26 नवम्बर 2009 को लोकसभा में पेश किया गया था। इस आधिकारिक संशोधन में जनसंख्या शब्द से पहले 'ग्रामीण' शब्द जोड़ने का प्रस्ताव किया गया है और संविधान 110 वे संशोधन विधेयक 2009 के पहले प्रावधान के खंड (2) (3) में समान रूप से शामिल किया गया है। वर्तमान में पंचायतों की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या लगभग 29. 29 लाख है। प्रस्तावित संवैधानिक संशोधन के साथ ही निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या में 14 लाख से भी अधिक की वृद्धि होने की संभावना है। महिला प्रतिनिधियों के अधिक संख्या में निर्वाचित होने से उस राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों की सम्पूर्ण जनसंख्या लाभान्वित होगी, जहाँ पंचायती राज का अस्तित्व है।

महिलाओं के लिए इस आरक्षण का तर्क यह है कि पंचायतें विकास की कई योजनायें लागू करेंगी-जैसे आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के लिए योजना बनाना और इन योजनाओं को लागू करना। आंगनवाड़ी, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, जवाहर रोजगार योजना, ग्रामीण जल आपूर्ति कार्यक्रम, प्रौढ़ महिलाओं के लिए प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रमों का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं की भी स्थिति सुधारना है।

महिलाओं को आरक्षण प्रदान करके उन्हें विकास प्रक्रिया के केन्द्र में लाने का प्रयत्न किया गया है एवं आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से सक्षमता भी प्रदान की गयी है। जिसके माध्यम से वह अपनी शक्ति और उपस्थिति दर्ज करा सकेंगी। यह हमारे सामाजिक ताने-बाने संस्थागत व्यवस्था और सामाजिक व्यवहार पर निर्भर करेगा।

संविधान में संशोधन से पूर्व परामर्शात्मक चरण में स्थानीय निकायों के चुनाव हेतु अनुभवी और सक्षम महिलाओं की पर्याप्त उपलब्धता पर शंकाएं व्यक्त की गई थी। आरक्षण के रास्ते पंचायतों और नगर पालिकाओं में उन्होंने महत्वपूर्ण पद प्राप्त किये हैं और इन पदों के साथ अपेक्षित उत्तरदायित्वों को संभालने और पूरा करने में वे व्यवहारिक एवं सकल अनुभव भी प्राप्त कर रही हैं। महिलाओं ने अपनी सेवाओं का सराहनीय प्रदर्शन किया है और सम्मानित पुरस्कारों को भी प्राप्त किया है। साक्षरता के अभाव से होने वाली असमर्थता के प्रति जागरूक बनते हुए साक्षरता प्राप्त करने को प्राथमिकता दी है। इन महिलाओं द्वारा सुशासन के साथ-साथ महिलाओं के साथ हो रही घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, शराबखोरी इत्यादि अनेक सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समाधान बढ़ गया है। यह भेदभाव का जरिया नहीं बल्कि समाज में गैर-बराबरी को खत्म करने एवं न्याय एवं समता को स्थापित करने का माध्यम है।

पंचायतों में आरक्षण के कारण ग्रामीण शक्ति ढांचे के पारंपरिक प्रतिनिधित्व स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। महिलाओं के प्रवेश ने ग्रामीण शक्ति ढांचे में उच्च जाति लोगों के नियंत्रण को कम कर दिया है तथा निर्णय निर्माण को भी प्रभावित किया है। पंचायती राज संस्थाओं में निर्णय व्यक्ति की उनमें स्थिति, आदर तथा वास्तविक शक्ति के प्रयोग पर निर्भर करता है।

### **पंचायतों के समक्ष चुनौतियाँ -**

पंचायतों व उनके प्रतिनिधियों के समक्ष चुनौतियाँ ही चुनौतियाँ हैं पंचायतों की कार्यात्मक स्वस्थता का मामला बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि बिना यह जाने कि पंचायतों के विभिन्न स्तरों के क्या-क्या

कार्य हैं, वे कैसे कार्य कर पाएंगे और उनके प्रतिनिधि भी कैसे अपनी जिम्मेदारी निभा पाएंगे। 73वें संविधान संशोधन की धारा 2346 में कहा गया है कि राज्य विधान मंडल पंचायतों को इतने अधिकार व शक्तियाँ प्रदान करे ताकि वे स्वयं शासन की संस्थाएं बन सकें और आर्थिक विकास व समाजिक न्याय की योजनाएं भी अपने स्तर पर बना सकें, लेकिन राज्य सरकारों के द्वारा इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। किसी राज्य ने तो 73 वें संविधान 11 वीं सूची को ज्यों का त्यों पंचायत अधिनियम में रख दिया किसी राज्य में एक ही कार्य को पंचायत के एक से अधिक स्तर को दे दिया। इस प्रकार राज्यों को पंचायतों के कार्यों की तस्वीर भी स्पष्ट नहीं है, जिससे वह पंचायत प्रतिनिधियों से सामने चुनौती बनकर खड़ी है। इस चुनौती का समाधान सही मायनों में संविधान में ही अलग से पंचायत सूची बनाकर किया जा सकता है।

वित्तीय साधनों के अभाव में पंचायत के अधिकारों का कोई अर्थ नहीं है। पंचायतों के पास अपने वित्तीय साधन जुटाने के कर व गैर कर के तरीके बहुत कम हैं। अगर कुछ शक्ति साधन जुटाने की है भी तो ये मात्र ग्राम पंचायत के पास हैं, जहां पर उनके पास पर्याप्त प्रशासनिक मशीनरी भी नहीं है, जिसकी सहायता से वे वित्तीय साधन जुटा सकें। पंचायतों को वित्तीय साधनों के लिए हमेशा राज्य सरकार या केन्द्र सरकार पर निर्भर रहना पड़ता है। पंचायतों की आर्थिक स्थिति कैसे मजबूत की जाए इसके लिए सभी राज्यों में राज्य वित्त आयोग का गठन हुआ है। उनमें से अधिकांश ने अपने रिपोर्ट भी राज्य सरकार को सौंप दी है, लेकिन राज्य सरकारों ने अधिक आय देने वाले कर जैसे बिक्री कर, उत्पाद शुल्क आदि में से पंचायतों के साथ साधन बांटने की पहल नहीं की है। इसके अतिरिक्त पंचायत प्रतिनिधियों ने भी अपने स्तर पर साधन जुटाने की पहल नहीं की इस डर से कि कहीं वे अपने क्षेत्र में अलोकप्रिय न हो जाए। पंचायतें स्वयं भी इस तरह के वातावरण में नहीं पनपीं कि वे स्वयं अपने साधन जुटाएं क्योंकि पंचायतों को केन्द्र व राज्य सरकारों ने स्वायत्त शासन की संस्थाएं समझने के बजाय दोनों सरकारों द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों की एजेंसी मात्र समझा गया।

पंचायतें अपना कार्य प्रभावी ढंग से निपटाएं इसके लिए पर्याप्त कर्मियों का होना भी आवश्यक है। संविधान ने पंचायतों को स्वाशासन की संस्थाओं का दर्जा तो दिया लेकिन उन्हें अपने कार्य करने के लिए पर्याप्त कर्मियों का प्रबंध नहीं किया। वर्तमान स्थिति यह है कि पंचायतों के पास जो कार्मिक कार्य कर रहे हैं उनका चयन, नियंत्रण, हस्तांतरण आदि सभी राज्य सरकार के हाथ में हैं अतः ये अधिकारी व कर्मचारी पंचायतों के प्रति उत्तरदायी होने के स्थान पर अपने उच्च अधिकारियों के प्रति उत्तरदायी हैं।

### संभावनाएँ -

पंचायतों के माध्यम से ग्रामीण जनता में जागरूकता व जुझारूपन का विकास हुआ है। दलित वर्ग एवं महिलाएँ ग्रामीण समाज के उच्च वर्ग को चुनौती दे रहे हैं 9-10 अक्टूबर 1995 को केन्द्र सरकार ने पंचायत प्रतिनिधियों का सम्मेलन किया था। जिसमें लगभग 7,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इसमें भाग लेने आई एक महिला प्रतिनिधि के केन्द्र व राज्य स्तर के नेतृत्व को ललकारते हुए कहा था कि यो तो पंचायतों को अधिकार व कोष दो या फिर जन-जागरण का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाओ क्योंकि सारे मतदाता जिन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों को चुना है, यह महसूस कर रहे हैं कि एक साथ विश्वासघात किया गया है।

पंचायत प्रतिनिधियों को जो पंचायतों के संचालन के लिए बुनियादी ज्ञान का अभाव था वह

धीरे-धीरे सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे जागरूकता प्रशिक्षण कार्य से दर हो रहा है।

केन्द्र सरकार व कुछ राज्य सरकारों ने पंचायतों को सशक्त बनाने में कुछ स्वागत योग्य कदम उठाए हैं। केन्द्र स्तर पर मुख्य रूप से विस्तार अधिनियम, 1999-2000 वर्ष को ग्राम सभा वर्ष घोषित करना तथा जो राज्य पंचायतों को वांछित व शक्तियाँ प्रदान नहीं करेंगे व समयानुसार पंचायतों के चुनाव नहीं कराएँगे उनको ग्रामीण रोजगार की योजनाओं का कुल आवंटन का 20 प्रतिशत रिलीज नहीं किया जाएगा। ये कुछ ऐसे वित्तीय व प्रशासनिक निर्णय हैं जो राज्य स्तर के नेतृत्व व नौकरशाही को पंचायतों को मजबूत करने में कुछ हद तक बाध्य करेंगे। राज्य स्तर पर जैसे केरल का जनवादी अभियान, मध्य प्रदेश की जिला सरकार, ग्राम सभा में चुने प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार व शिक्षा गारंटी व पश्चिम बंगाल में भूमि सुधार कुछ ऐसे नीतिगत निर्णय हैं जो पंचायतों को सशक्त करेंगे तथा भविष्य में अन्य राज्य भी इसी तरह से नीतिगत निर्णय लेंगे ऐसे आशा है।

### समालोचनात्मक विश्लेषण -

विगत में कई ऐसी घटनाएँ हुईं जिनसे पंचायती राज का ढांचा कमजोर हुआ वस्तुतः महाराष्ट्र, गुजरात को छोड़कर पंचायती राज संस्थाओं को योजना तथा इसके कार्यान्वयन का काम बड़े पैमाने पर देने की बात बहुत कम जगह पर हुई। नव-निर्वाचित पंचायती राज संस्थाओं को वही काम सौंपे गए जो पहले ग्राम पंचायत करती थी या जो सामुदायिक विकास कार्यक्रम का हिस्सा थे।

पंचायती राज संस्थाओं को विकास की प्रक्रिया से अलग करने में नौकरशाही की सम्भवतः अपनी एक खास भूमिका रही है। कई कारणों से उनका बोध इस प्रकार अनुकूलित हुआ। वे पदानुक्रम की प्रणाली को संगठनात्मक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करते रहे। अधिकारी यह अनुभव करते रहे कि वह वित्तीय प्राथमिकताओं के परिणाम दिखाने के लिए प्रमुख रूप से राज्य सरकारों के प्रति उत्तरदायी रहे। इसलिए एक तरफ तो पंचायती राज संस्थाओं को अतिरिक्त कार्यकलाप सौंपने की बात वे नहीं माने, दूसरी तरफ निर्वाचित प्रतिनिधियों की देखरेख में काम करने के लिए अपने आपको आसानी से तैयार नहीं कर सके।

पूरे राष्ट्रीय परिदृश्य को देखने से यह पता चलता है कि पंचायती राज संस्थाओं के कार्यकलाप बहुत कम रहे, उनके संसाधनों का आधार बड़ा कमजोर था और उनकी तरफ बहुत कम ध्यान दिया गया। इस प्रकार पंचायती राज प्रणाली का कार्यकरण उत्साह हीन हो गया। इसके अलावा कुछ राज्य सरकारों ने चुनाव करने भी स्थगित कर दिए अथवा कोई न कोई कारण बताकर पंचायती राज संस्थाओं के ढांचे में से एक न एक महत्वपूर्ण स्तर को हटा दिया। इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उच्च स्तर पर राजनीतिक विशिष्ट वर्ग की प्रवृत्ति नीचे के स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने के प्रति अनुकूल नहीं है। इस सिलसिले में कुछ राज्यों में संसद सदस्यों तथा विधान सभाओं के सदस्यों को पंचायती राज के प्रति उदासीन हो जाना विशेष महत्व रखता है, क्योंकि वे अपने-अपने निर्वाचन राज के कारण उभरने वाले नए नेतृत्व से अपनी स्थिति के लिए खतरा महसूस करने लगे थे। अन्तिम रूप से यही विश्लेषण किया जा सकता है कि इस सबके परिणामस्वरूप पंचायती राज संस्थाओं के प्रति राजनीतिक समर्थन कमजोर पड़ गया और इसके माध्यम से काम करने की प्रशासन की इच्छाशक्ति भी कमजोर पड़ गई।

पंचायती राज संस्थाओं का कार्य-निष्पादन राजनीतिक गुटबाजी से भी दूषित है। इसमें या तो विकास रूका है या कम हुआ है। भ्रष्टाचार अकुशलता, कार्यविधियों के प्रति उदासीनता, रोजमर्रा

के प्रशासन में राजनीतिक हस्तक्षेप, लोकसेवा के स्थान पर संकुचित निष्ठाएं विशेष प्रयोजनों के लिए किए गए कार्य और शक्तियों का केन्द्रीकरण-इन सभी कारणों से गांवों के औरत आदमी के लिए पंचायती राज का उपयोग बहुत कम रह गया है।

### निष्कर्ष -

उपरोक्त साक्ष्य से यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि योजना तथा विकास के क्षेत्र में पंचायती राज संस्थाएं असफल रही हैं। यह सच है कि पंचायती राज संस्थाएं भौतिक तथा मानवीय साधनों का स्थान नहीं ले सकती। उदाहरण के तौर पर कृषि विकास के लिए साधन सिंचाई सुविधाएँ, चकबंदी, नियमित गाड़ियाँ, सहकारिताओं का जाल, संचार प्रणाली का विकास, और इन सबसे बढ़कर कृषि व्यवसाय पर गर्व कर सकने वाले किसान हैं और पंचायती राज संस्थाएँ किसी भी तरह इनके अभाव की पूर्ति नहीं कर सकती। पंजाब और हरियाणा के विकास की कहानी से यह बात सर्वथा स्पष्ट हो जाएगी। लेकिन इसके साथ-साथ यह भी सच है कि यदि साधन सुलभ हो और तब पंचायती राज संस्थाओं को विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाया जाए, तो योजना यथार्थ पर आधारित होगी, कार्यक्रम अनुभव की जा रही आवश्यकताओं की पूर्ति और जनता को दृष्टिगत रखकर निर्धारित की गई प्राथमिकताओं के अनुसार बनाए जाएंगे और उनके कार्यान्वयन में जनता भाग लेगी और उसका सहयोग भी। यह सोचना गलत होगा कि पंचायती राज सर्वथा असफल रहा है। इसकी उपलब्धियाँ अनेक हैं, राजनीतिक दृष्टि से इसने भारतीय भूमि में लोकतंत्र के बीजारोपण का काम किया है। और एक औसत नागरिक को पहले से अधिक अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाया है। प्रशासनिक दृष्टि से इसने कुलीन नौकरशाही वर्ग और जनता के बीच की खाई को पाटा है। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इसने नया नेतृत्व पैदा किया है, जो कि केवल आयु की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम उम्र का है बल्कि दृष्टिकोण में अधिक आधुनिक और सामाजिक परिवर्तनों का पक्षधर भी हैं। विकास की दृष्टि से इसने ग्रामीण जनता के मन में विकास की भावना जागृत करने में मदद की है।

निष्कर्षतः माना जा सकता है कि पंचायत राज व्यवस्था का पावन उद्देश्य निश्चित ही भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करना और निम्न स्तर पर राजनीतिक सहभागिता को स्थापित करना है परंतु व्यावहारिक पक्ष यह संकेत देता है कि व्यवस्था में कुछ आधारभूत सुधारों एवं उचित शिक्षण-प्रशिक्षण और व्यापक स्तर पर जनप्रचार आदि के माध्यम से इस व्यवस्था को पूर्ण रूप में सफल बनाने हेतु प्रत्येक स्तर पर मतदाताओं एवं महिला प्रतिनिधियों की पूर्ण सहभागिता के साथ अधिक परिश्रम की आवश्यकता है ताकि भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की जड़ों को पूर्ण रूप से प्रेषित सुदृढ़ किया जा सके।

### ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रमों में पंचायती राज की भूमिका के लिए प्रमुख सुझाव-

एक आदर्श ग्रामीण विकास की नीति में पंचायती राज्य की भूमिका एक आधारभूत संस्थागत ढांचा की भांति कार्य करेगी, जिसमें निम्नांकित तत्वों का समावेश किया जाना अति आवश्यक है।

1. सर्वप्रथम ग्रामीण विकास आयोजन में सड़क यातायात को प्राथमिकता देना अनिवार्य है इससे एक गांव से दूसरा गांव, गांव से विकास खण्ड तहसील जिला मुख्यालय प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय राजधानी तक जुड़ सके।
2. शिक्षा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण का ग्रामीण विकास से निकट सम्बन्ध है, अशिक्षा के कारण ग्रामीण निर्धन वर्ग योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं अतः शिक्षा सस्ती एवं निःशुल्क होना चाहिए।

3. अनवरत जलपूर्ति लघुसिंचाई योजनाओं का विकास सुख सुविधायें पशुचिकित्सा, पशुपालन केन्द्र, कुटीर उद्योग, बीज, कच्चा माल तथा औजारों की आपूर्ति के साथ-साथ कृषि अप्राप्त विपणन की व्यवस्था अनिवार्य है। कृषि का आधुनिकीकरण आवश्यक है।
4. छोटे गाँव पंचायती राज से कैसे जुड़े यह सोचना चाहिए। ग्राम पंचायतों को छोटा करना, अधिक आर्थिक साधन उपलब्ध कराना भी एक मार्ग हो सकता है।
5. पंचायती राज में गुटबन्दी (जाति, समुदाय, स्वार्थ, दल आदि) की स्थिति से मुक्ति के लिए इन लोगों को सक्रिय होना चाहिए। गाँव के अनेक कार्य महिलाओं को सौंपे जा सकते हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास व सक्रियता आयेगी। महिलाओं से सम्बद्ध आर्थिक कार्यक्रम महिलाओं को ही सौंपने, उन्हीं के माध्यम से क्रियान्वित करने की योजना भी बनायी जाये। महिलाओं को आर्थिक एवं राजनीतिक दायित्व भी प्रदान किये जा सकते हैं।
6. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ी जाति के लोगों की पंचायती राज में रुचि कम है। पंचायत उनके प्रति उदासीन है, इस स्थिति में उन्हें कार्यक्रमों का पूरा लाभ नहीं मिल पाता है। इन समुदायों में कुछ परिवार अवश्य आगे आये हैं, जिन्हें कार्यक्रमों का लाभ मिलता है। पंचायती राज के सन्दर्भ में जनसहभागिता बढ़े इस दिशा में प्रयास आवश्यक हैं।

#### सन्दर्भ -

1. ईश्वरी प्रसाद एवं शैलेश शर्मा, प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म-दर्शन, मीनू पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृ. 588.
2. रामजी सिंध, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 1994, वर्ष-39, अंक-12, पृ 30-316
3. एस.एन.मिश्रा, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन ज्ञान दा प्रकाशन, पटना, 1999, पृ. 411-412.
4. वंदना बंसल, पंचायती राज में महिला भागीदारी, कल्याण पब्लिकेशन, दिल्ली, 2004 पृ. 177
5. रोली शिवहरे, पंचायतों में महिलाओं की सकारात्मक हिस्सेदारी, कुरुक्षेत्र, अगस्त 2009, पृ. 22.
6. डॉ. सरला गोपालन, समानता की ओर अपूर्ण कार्य- भारत में महिलाओं की स्थिति 2001 ए राष्ट्रीय महिला आयोग, दिल्ली, 2002, पृ. 291-292.
7. बलवंत राय मेहता, पंचायती राज समिति रिपोर्ट, 1958.
8. महिपाल पंचायती राज-सुनौतियाँ एवं संभावनाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट भारत 2004 पृ. 128.
9. वही, पृ. 129
10. देवेन्द्र उपाध्याय, पंचायती राज व्यवस्था, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 28.
11. रजनी कोठारी, पॉलिटिक्स इन इण्डिया, आरिएट लागमन पा. लिमिटेड, 1970 पृ. 132.
12. रेनहार्ड बैनडिक्स, नेशनल बिल्डिंग एण्ड सिटिजनशिप, न्यूयार्क, 1964, पृ. 266-83.
13. डब्ल्यू.एच.मारिस. जान्स द गवर्नमेन्ट एण्ड पॉलिटिक्स ऑफ इण्डिया, 1974, पृ. 207-29.
14. रमण जी राय, पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण, भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका, वर्ष-चतुर्थ, अंक-प्रथम-द्वितीय (संयुक्तांक) जनवरी-दिसम्बर, 2012 2229.452, पृ. 27-36



## समाज में साहित्य की भूमिका ( कबीर के सन्दर्भ में विशेष )

-डॉ. रश्मि कुमारी

एसो.प्रो. हिन्दी,

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

### सारांश

समाज-रचना के लिए कबीर-ने कोई सुधारवादी आंदोलन नहीं चलाया। दयानन्द सरस्वती, राजा राम मोहन राय, स्वामी राम तीर्थ अथवा रामकृष्ण परमहंस की कोटि में उन्हें नहीं रखा जा सकता। उनकी चेतना मूलतः आध्यात्मिक थी। वह स्वभाव से संत थे किन्तु कर्म से साधक और सुधारक। वह न समझौतावादी थे और न पलायनवादी। वह सामाजिक वैषम्य से क्षुब्ध थे। दलित और शोषित वर्ग के प्रति उनमें गहरी सहानुभूति थी। समाज-कल्याण उनका लक्ष्य था। अभ्युदय के साथ निःश्रेयस उनकी कामना थी। कविता के लिए कविता उनका ध्येय नहीं था। उनकी गहन अनुभूति ही अभिव्यक्ति का आधार है। इसीलिए उनकी वाणी में समाज के विविध चित्र हैं। उनमें गहन सत्य ही मुखर हुआ है।

### मुख्य शब्द

समाज, कर्मकाण्ड, भेदभाव, एकता, मिथ्याचार, जातिप्रभा, साहित्य

कबीर के आविर्भाव काल में समाज की दशा अत्यन्त विषम एवं शोचनीय थी। सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था-विचार भी रूढ़िगत मान्यताओं एवं अंध-विश्वासों में पर्यवसित हो चुका था। फलतः मानव जीवन सार्थकता का स्रोत अवरूद्ध हो रहा था। सारा समाज एक प्रकार की जड़ता और मूल्य-मूढ़ता की स्थित को पहुँच चुका था। असत्य को ही सत्य माना जाता था। सारा समाज वर्ण-आश्रम, वेद-शास्त्र, तप-तीर्थ, व्रत-पूजा, काजी-मुल्ला, स्त्री-पुरुष, देवी-देवता, पीर-पैगम्बर सभी विषय-वासना से ग्रस्त थे। धर्म के नाम पर पाखण्ड और मिथ्याचार को बढ़ावा मिल रहा था, कथनी-करनी में कोई साम्य नहीं था। छल और धूर्तता का साम्राज्य था। नाना प्रकार के सम्प्रदाय जन्म ले चुके थे। तथाकथित साधुओं की भीड़ चतुर्दिक दिखाई पड़ती थी। जिनकी वेशभूषा सन्तों जैसी थी किन्तु आचरण निम्न कोटि का था समाज में ऐसे साधुओं की भीड़ देखी जा सकती थी जो आध्यात्म चिंतन के लिए विरक्त नहीं हुए थे अपितु मठाधीश बन कर शिष्यों की अपार मण्डली बना कर ऐश्वर्य-भोग में ही लिप्त रहते थे।

स्वामी हूता संत का पैकाकार पचास।

राम नाम काठै रहा, करै सिखा की आस॥ ( चाणक को अंग )

वर्ण व्यवस्था और जातिवाद

कबीर के समय एक ओर साधु सन्यासियों की मण्डली धर्म के नाम पर मिथ्याचार और

पाखंड को बढ़ावा देकर सामान्य जन को दिग्भ्रमित कर रही थी तो दूसरी ओर सारा समाज वर्ण व्यवस्था और जातिगत श्रेष्ठता-हीनता की जकड़बन्दी का शिकार हो रहा था। वर्ण व्यवस्था पर प्रतिष्ठित सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मण सर्वोपरि था वह धर्मशास्त्र का नियामक था उसने सभी वर्गों के मनुष्यों के लिए कर्म विभाजन करके अपने लिए अध्ययन अध्यापन, यज्ञ अनुष्ठान आदि सुरक्षित करके न केवल समाज का उच्चतम स्थान सुरक्षित कर लिया था अपितु भू-देव बन कर शेष समाज को अपना अनुयायी बना लिया था मध्यकाल तक आते आते वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हो गई। वर्ण केवल चार थे। किन्तु जातियों की संख्या बढ़ती चली गई। कुछ जातियां व्यवसाय के आधार पर अस्तित्व में आयीं। धीरे-धीरे समाज के निम्न वर्गों के प्रति भेदभाव बढ़ता जाने लगा। कुछ जातियों को अस्पृश्य मान कर घृणा की दृष्टि से देखा गया। शूद्रों के लिए वेद अध्ययन और मंदिर में प्रवेश भी वर्जित कर दिया गया। उन्हें अछूत की संज्ञा दे दी गई तथा सामाजिक धार्मिक अधिकारों से वंचित कर आर्थिक दृष्टि से भी उनका भरपूर शोषण किया गया। हिन्दी सन्त काव्य में इस सामाजिक वैषम्य की घोर प्रतिक्रिया मिलती है। सन्त कवियों ने जातिगत श्रेष्ठता के सिद्धांत को स्पष्टतया अस्वीकार कर दिया तथा इस विकृत व्यवस्था का खुल कर विरोध किया। कबीर भी लकीर पर चले नहीं बल्कि नवीन लकीर का निर्माण किया। उन्होंने जन्मगत श्रेष्ठता को पूर्णतया अस्वीकार कर दिया और कहा कि यदि सृष्टि के मन में वर्ण व्यवस्था होती तो वह मानव के जन्म देते ही ब्राह्मण के मस्तक पर तीन चिन्हों का तिलक क्यों नहीं लगा देता है। कबीर कहते हैं कि वास्तविक ब्राह्मण वहीं है जो ब्रह्म को जनता हैं किन्तु समाज में ब्राह्मण वे कहे जाते हैं जो ब्रह्म को नहीं जानते केवल यज्ञ में प्राप्त धन से अपना पेट पालते हैं।

### छुआछूत

पुरोहित वर्ग के मिथ्याचारों के फलस्वरूप ही समाज में ऊँच-नीच की भेदभावना का प्रसार हुआ और छुआछूत की बीमारी बढ़ती चली गई। इसका कुपरिणाम आज भी देखा जा सकता है। कबीर ने इसका खुले शब्दों में प्रतिकार किया वह सीधे पंडित से प्रश्न करते हैं बताओं छूत क्या है और कहां से उत्पन्न हुई है। कबीर की मान्यता है कि वास्तविक पवित्रता मानसिक विकारों का त्याग है, शेष सब दिखावा है इसलिये वह पाखंडी पंडित प्रश्न करते हैं कि हे पंडित तुम वह स्थान बताओं जो सर्वथा पवित्र है मैं वहीं भोजन करूँ-

कहु पंडित सूचा कवन ठाड। जहां वैसि हउँ भोजन खाड।  
माता जुठी पिता भी जूठा, जूठै ही फल लागे।  
आवहिं जूठे जाहिं भी जूठे, जूठे मरहिं अभागे॥  
अग्नि भी जूठी पानी जूठा, जूठै वैसि पकाया।  
जूठी करछी अन्न परोसा, जूठै जूठा खाया॥

### बाह्याचार खण्डन

कबीर अपने समय के सर्वाधिक जागरूक एवं संवेदनशील प्राणी थे। उनकी पैनी दृष्टि से समाज की कोई गतिविधि छिपी न रह सकती थी। धर्म के नाम पर जो विविध प्रकार

के बाह्याचार प्रचलित थे कबीर ने उनकी तीखी आलोचना की जहाँ उन्होंने हिन्दू धर्म में प्रचलित जप-तप-छापा-तिलक व अन्य कर्मकाण्डों की निःसारता का उल्लेख किया है वहीं दूसरी ओर मुस्लिम धर्मानुयायियों के रोजा नमाज तथा धर्म के नाम पर की जाने वाली हिंसा की निंदा की है। वस्तुतः वे विभिन्न धर्मों में प्रचलित ऐसे कर्मकाण्डों की निंदा कर रहे थे जो मनुष्य को मनुष्य से अलग कर रहे थे। उनकी मान्यता थी की धार्मिक रूढ़ियों की जकड़बन्दी के कारण मनुष्य उदारता, बन्धुत्व भावना आदि सद्गुणों से वंचित हो जाता है।

कबीर ने हिन्दू विधि विधानों की निरर्थकता पर प्रहार करने के साथ ही नाथ योगियों, जैनियों तथा मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों का भी विरोध किया। शासकों के निरंकुश और भेदभाव पूर्ण व्यवहार तथा मुल्ला मौलवियों की संकीर्ण धार्मिक नीतियों के कारण हिन्दू मुस्लिम समुदाय न केवल एक दूसरे से पृथक हो गये थे, अपितु दोनों धर्मानुयायियों में परस्पर घृणा और विद्वेष का भाव भी बढ़ गया था। मुसलमान हिन्दुओं को काफिर मानते थे और हिन्दू मुसलमानों को मलेच्छ। दोनों की जीवन पद्धति में महान अंतर था। एक एकेश्वर वादी था, तो दूसरा मूर्ति पूजकर एक जातिगत भेदभावना से ग्रस्त था, तो दूसरा धार्मिक जकड़बन्दी का शिकार। इस प्रकार दोनों में भेदभाव की खाई गहरी होती जा रही थी। धर्म के नाम पर हिन्दू मुस्लिम दोनों समुदायों में पशु-बलि की प्रथा प्रचलित थी। कबीर इस सामाजिक अव्यवस्था व धार्मिक संकीर्णता से क्षुब्ध थे। वे सामाजिक रूढ़ियों को समाप्त करके ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जो हर प्रकार के वैषम्य और अंधविश्वास से मुक्त हो। वस्तुतः वे सत्य के प्रचारक थे। उनकी कविता सत्य के प्रचार का प्रभावपूर्ण माध्यम थी। वे इस बात से दुःखी थे कि सामंती व्यवस्था में धरती पर सामंतों का अधिकार था, तो धर्म पर उन्हीं के समर्थक पुरोहितों का। कबीर ने धर्म पर से पुरोहितों का यह इजारा तोड़ा और अछूतों को सांस लेने का मौका मिला। यह विश्वास मिला की पुरोहितों और शास्त्रों के बिना उनका काम चल सकता है।

### हिन्दु मुस्लिम एकता का प्रतिपादन

कबीर के उपदेशों की मौलिकता यह थी कि उन्होंने अपने समय के हिन्दुओं और मुसलमानों का ध्यान ऐसे धर्म की ओर आकृष्ट किया, जो साम्प्रदायिक सीमाओं से परे सार्वभौम पथ का था। ऐसा मार्ग जिस पर दोनों सम्प्रदाय के लोग एक साथ चल सकते थे। कबीर ने ऐसे भविष्य की कल्पना की थी, जो सभी प्रकार की विषमताओं से परे हो। उन्होंने ऐसे धर्म का प्रचार किया जिसका आधार विश्वास और व्यक्तिगत अनुभव था। उन्होंने निःसंकोच भाव से सभी प्रकार के मतग्रहों का विरोध किया क्योंकि उनकी आत्मा साम्प्रदायिक संघर्षों और औपचारिक धार्मिक मान्यताओं को लेकर उत्पन्न विवादों से दुःखी थी। उन्होंने ईश्वर की तलाश के लिए यथार्थ पर बल दिया। उनका संदेश था कि सत्य स्वाभाविक है और सभी प्रकार के बनावटी पन से मुक्त है। कबीर की दृष्टि में हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्म के वास्तविक मर्म को नहीं समझते। पारमार्थिक सत्य एक है यह जान लेने पर सभी प्रकार के धार्मिक विवाद स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि भक्ति काल के समय समाज में जो परिस्थितियाँ मौजूद थी कदाचित आज का समाज भी उनसे अछूता नहीं है, वर्तमान समय में भी कबीर प्रासांगिक नजर आते हैं।

**सन्दर्भ -**

- 1 कबीर के आलोचक- डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, 1997
- 2 कबीर का सामाजिक दर्शन- डॉ. प्रहलाद मौर्य, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1974
- 3 अकथ कहानी प्रेम की- डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, 2016
- 4 हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि- डॉ. डी.पी. सक्सैना, अग्रवाल प्रकाशन, 2019
- 5 कवि कबीर- हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, 2019

# श्रीमद्भगवद्गीता में निहित दार्शनिक तत्व

डॉ. दीप्ति वाजपेयी

एसो. प्रो. संस्कृत

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

## सारांश

गीता का दर्शन अद्वैतवादी दर्शन है। साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आदि समस्त दर्शनों का समन्वय करते हुए गीता अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है। गीता में परमात्मा व आत्मा में अंश-अंशीभाव स्वीकार किया गया है। निर्विकार, अनादि, अनन्त, निर्गुण, निराकार, अविनाशी ब्रह्म जब “एकोऽहं बहुस्यामि” के भाव से युक्त होता है तो सृष्टि का निर्माण होता है। सृष्टि व सृष्टिकर्ता परमात्मा में अभिन्नता की अनुभूति करना मानव जीवन का लक्ष्य ही मोक्ष है।

## मुख्य शब्द

परम ब्रह्म, अद्वैत, जीवात्मा, निष्काम कर्मयोग, दर्शन, मोक्ष

दार्शनिक विचार :-

यह सम्पूर्ण संसार दुःखमय है और दुःखनिवृत्ति जीवन का लक्ष्य है। दुःखनिवृत्ति के लिये उपनिषदों का अध्ययन, चिन्तन एवं मनन महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में उपनिषदों के गहन अध्ययन के लिये समयाभाव के साथ-साथ अपेक्षित प्रज्ञा का भी अभाव पाया जाता है अतः अल्प समय व सहज बोध की दृष्टि से गीता का ज्ञान ऐसा सुलभ सुधातत्त्व है, जो उपनिषदों के सार से निर्मित हुआ है। जैसा कि कहा भी गया है-

“सर्वोपनिषदों गावों दोग्धा गोपालनन्दनः।

पार्थोवत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतमहत्”॥

अर्थात् सभी उपनिषद् गाय है, श्रीकृष्ण दूध दुहने वाले हैं, अर्जुन दुग्ध पान करने वाले हैं तथा गीता रूपी अमृत दुग्धवत् है। गीता के दार्शनिक विचारों का अवलोकन निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत किया जा सकता है।

तत्त्व मीमांसा-

(क) सर्वोपरि सत्ता या अन्तिम सत्यः

सर्वोपरि सत्ता, परमात्मा या ब्रह्म है। यही एकमात्र अन्तिम सत्य है। इसे पुरुषोत्तम या ईश्वर भी कहा गया है। यह अनिवाशी, सर्वज्ञ, सार्वकालिक, सर्वत्र व्याप्त, अनादि, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, शुद्ध, सच्चिदानन्द तथा अविद्या से परे है-

“उत्तमः पुरुषस्तन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।

या लोकत्रय माविश्य, विभर्त्यव्यय ईश्वरः॥1॥

ब्रह्म अद्वैत है इसी में सम्पूर्ण जगत् मणियों के सदृश्य गुथा हुआ है-

“मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनं जय।

मयि सर्वमिदं प्रोत सूत्रे मणिगणा इव॥2॥

यह सर्वोपरि सत्ता एक होते हुये भी अव्यक्त तथा व्यक्त भेद से दो रूपों में विभक्त है। अव्यक्त ब्रह्म, निराकर, निर्गुण, अनादि, अनन्त व अविनाशी स्वरूप वाला है। अव्यक्त का व्यक्त रूप अजन्मा और सब प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन कर योगमाया से प्रकट होता है-

“अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।

प्रकृति स्वामधिष्ठाय संभावाम्यात्ममायया”॥3॥

यह ब्रह्म पुरुषोत्तम स्वरूप में धर्म की हानि एवं अधर्म की वृद्धि पर साधुओं की रक्षा, दुष्टों के संहार व धर्म संस्थापना हेतु युग-युग में प्रकट होता है।

## 2. जीवात्मा:

“ममैवांशों जीवलोके जीवभूतः सनातनः” कहकर श्रीकृष्ण न जीवात्मा को परमात्मा का ही सनातन अंश स्वीकार किया है। आत्मा अविनाशी, अप्रमेय, नित्य व शाश्वत् है। इसे न शास्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है, न जल भिगो सकता है, न वायु सुखा सकती है-

“न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायभूत्वा,

भविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो,

न हन्यते हन्यमाने शरीरे”॥4॥

इस अविनाशी व निर्विकार आत्मा को प्रकृति से उत्पन्न तीन गुण-सत्, रज, तम शरीर से बाँधते हैं-

सत्त्वं रजस्तमं ति गुणाः प्रकृति संभवाः।

निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्”॥5॥

## 3. प्रकृति और पुरुष:

गीता प्रकृति और पुरुष इन दो तत्वों से ही विश्व की उत्पत्ति मानती है। गीता में प्रकृति के दो रूप स्वीकार किये गये हैं- परा प्रकृति और अपरा प्रकृति। अपरा निम्न श्रेणी की प्रकृति है जिसके आठ विभाग हैं- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि एवं अहंकार। परा उच्च श्रेणी की प्रकृति है जो सबको शक्ति देती है। यह चेतन प्रकृति है-

“अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिः विद्धि मे परम्

जीवभूता महाबाहो यथेदंधार्यते जगत्”॥6॥

गीता अद्वैत वादी दर्शन होने के कारण प्रकृति व पुरुष में द्वैत स्वीकार नहीं करती। पुरुष चेतना है, इस बीज रूप पुरुष को ईश्वर जड़ प्रकृति के गर्भ में प्रवेश कराता है। तभी सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है-

**“मम योनिमहद् ब्रह्म गर्भं दधाम्यहम्।  
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत”॥7॥**

अतः जड़ व चेतन प्रकृति के योग से जगत् की उत्पत्ति होती है।

#### **4. मनुष्यः**

मनुष्य को गीता में क्षेत्र कहा गया है। यह क्षेत्र (शरीर) पंच महाभूतों, मन, अहंकार, बुद्धि, मूल प्रकृति अर्थात् त्रिगुणमयी (सत-रज-तम) माया व दस इन्द्रिया तथा इनके विषयों से युक्त है। मनुष्य में शरीर तत्त्व नाशवान व आत्मा नित्य शाश्वत् तत्त्व है यह आत्मा परमात्मा का ही अंश है। सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले व मृत्यु के बाद आत्मा ही होते हैं-

**“अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत॥”8॥**

#### **ज्ञान मीमांसा:-**

गीता में ज्ञान की सर्वश्रेष्ठता स्वीकार करते हुये कहा गया है-

**“न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते॥”9॥**

ज्ञानामृत का सेवन करने वाले ही परमब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं। ज्ञान के द्वारा ही पापों से मुक्ति मिलती है और ज्ञानाग्नि ही सम्पूर्ण कर्मों का नाश करती है। व्यक्ति ज्ञान के द्वारा ही सच्चिदानन्द स्वरूप के दर्शन करता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है क्योंकि ज्ञान मानव का मोह नष्ट करके उसे चैतन्य बना देता है।

#### **ज्ञान-प्राप्ति का लक्ष्य-**

ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य परमब्रह्म है अर्थात् गीता के अनुसार ज्ञेय या जानने योग्य परमात्मा है। जिसे जानकर व्यक्ति परमानन्द में विलीन हो जाता है-

**“ज्ञेयं मत्तत्प्रवक्ष्यामि मञ्जात्वामृतमश्नुते”॥10॥**

गीता में ज्ञान प्राप्ति का स्रोत आत्मा को बताया गया है। आत्मा, जो कि बुद्धि से सूक्ष्म तथा सब प्रकार से बलवान व श्रेष्ठ है, को जानकर ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

#### **ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया-**

गीता में ज्ञान-प्राप्ति की निम्नलिखित प्रक्रिया को स्वीकार किया गया है-

#### **( 1 ) कामनाओं की समाधि-**

ज्ञान कामनाओं से आवृत है। इन्द्रियां, मन व बुद्धि इस काम के निवास स्थान है। काम, मन, बुद्धि व इन्द्रियों के द्वारा ही ज्ञान को आच्छादित कर जीवात्मा को मोहित करता है अतः

इसे समाधिस्थ करना आवश्यक है।

## (2) गुरु की प्रति श्रद्धा एवं तत्परता-

जितेन्द्रिय, गुरु के प्रति श्रद्धालु तथा ज्ञान प्राप्ति के लिये तत्पर मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त करता है-

“श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः”॥11॥

## (3) गुरु-सेवा व प्रश्न-प्रतिप्रश्न-

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में गुरु सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। अतिरिक्त ज्ञानी जनों से प्रश्न-प्रतिप्रश्न द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है-

“तद्धिद्धि प्राणिपातेन प्रतिप्रश्नने सेवया”॥12॥

अभ्यास तथा योग के द्वारा एकाग्रता प्राप्त करना एवं मन व इंद्रियों को वश में करना भी ज्ञान प्राप्ति में सहायक है। गीता में सात्त्विक, राजस व तामस तीन प्रकार का ज्ञान बताया गया है जिसमें सात्त्विक ज्ञान श्रेष्ठ है जिसको योगाभ्यास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

## ज्ञानी व्यक्ति के लक्षण-

ज्ञानी व्यक्ति आध्यात्म ज्ञान में नित्य स्थित होकर प्रणिमात्र में परमात्मा के दर्शन करता है। ज्ञान-प्राप्त व्यक्ति सरल, शुद्ध, दम्भाचरण रहित, क्षमावान् अन्तःकरण से स्थिर, अनासक्त, मोह रहित, हर्ष-शोकादि में होता है। ऐसा ही व्यक्ति जीवनमुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करता है।

## मूल्य मीमांसा-

गीता की आचार संहिता निष्काम कर्मयोग है, जो मात्र भारतीय के लिये न होकर समस्त मानव मात्र के लिये है। निष्काम कर्मयोग का आचरण कार्य से विरक्ति न होकर कार्य में विरक्ति है अर्थात् मानव कर्म कर्तव्यपूर्ति के निमित्त है। मोक्ष जीवन का अन्तिम लक्ष्य है अतः मोक्ष ही सर्वोच्च मूल्य है। ब्रह्मत्व की प्राप्ति अथवा ब्रह्म के साथ सम्पर्क (ब्रह्मसंस्पर्शम्) ही मोक्ष है और यही जीवन का परम उत्कर्ष है। ईश्वर सत् चित् एवं आनन्दमय है अतः गीता के अनुसार मानव जीवन के मूल्य हैं- सत्यं, शिवं, सुन्दर, जिसे ज्ञान, कर्म व भक्ति से सम्बद्ध किया जा सकता है। ज्ञान, सत्य से सम्बन्धित है और कर्म ही कल्याणकारी है। कर्म करना अधिकार व कर्तव्य दोनों ही हैं। मानव को कर्महीन जीवन नहीं जीना चाहिये, किन्तु कर्म, फल की इच्छा से रहित अनासक्त भाव से करना चाहिए।

भक्ति सुन्दरता से परिपूर्ण है। इस प्रकार सत्यं, शिवं, सुन्दर या ज्ञान, कर्म, भक्ति का समन्वय मानव जीवन के विशिष्ट मूल्य है। इन मूल्यों का एक ही गन्तव्य है- मोक्ष। अतः मोक्ष ही गीता के अनुसार अन्तिम व सर्वोपरि मूल्य है। मोक्ष प्राप्त व्यक्ति राग-द्वेष, क्रोध-लोभ, मोह, हर्ष शोकादि से मुक्त होकर मन इन्द्रिय को निग्रह कर समत्व बुद्धि से सब प्राणियों में समभाव से परमात्मा के दर्शन करता हुआ एकीभाव से ब्रह्म में स्थित होता है।



सन्दर्भ -

1. गीता-18:63
2. गीता-7:7
3. गीता-4:6
4. गीता-2:20
5. गीता-14:5
6. गीता-7:5
7. गीता-14:3
8. गीता-2:28
9. गीता-4:38
10. गीता-13:12
11. गीता-4:84
12. गीता-4:34

# माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन

(सहारनपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. रतन सिंह

असि. प्रो.-बी.एड.

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर  
महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

## सारांश

औपचारिक शिक्षा हेतु विद्यालय एक सशक्त माध्यम के रूप में विद्यमान है। माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के मध्य एक कड़ी का काम करती है। माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र/छात्राएं किशोर अवस्था में होते हैं। किशोरावस्था को आधी-तूफान कि अवस्था कहा जाता है ऐसी अवस्था में अध्यापकों का परम दायित्व होता है कि वे छात्रों के समायोजन करने में सहायता करें परन्तु यदि अध्यापक स्वयं समायोजित नहीं हैं तो वो छात्रों के समायोजन में सहायक नहीं हो पाएंगे। अध्यापकों की समस्याओं को दूर कर सरकार, प्रबंध तंत्र, समाज, अध्यापकों को अपने विद्यालय एवं परिवेश में समायोजन करने में सहायक होगा। भारत सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा समीक्षा हेतु गठित ताराचंद समिति (1948) 1952 में “माध्यमिक शिक्षा आयोग”, 1965-66 में “राष्ट्रीय शिक्षा आयोग” (कोठारी आयोग) ने भी अपनी सिफारिशों में अध्यापक समायोजन पर विशेष बल दिया है।

## मुख्य शब्द

**माध्यमिक स्तर, समायोजन, आयोग, शैक्षिक, समष्टि, परिसूची, सांख्यिकीय, प्रविधियां**

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने सर्वप्रथम 1948 में विश्वविद्यालय आयोग (राधाकृष्णन कमीशन) का गठन किया, जिसने अपनी रिपोर्ट में एक सुझाव यह भी दिया की विश्वविद्यालय शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके पूर्व की माध्यमिक शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया जाये। 1948 में ही भारत सरकार ने माध्यमिक शिक्षा की समीक्षा हेतु “ताराचंद समिति” का गठन किया था। इस समिति द्वारा शिक्षकों के सम्बन्ध में यह सुझाव दिया गया कि शिक्षकों के वेतनमान और सेवाशर्तें “केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड” के प्रस्तावों के अनुकूल हो।

भारत सरकार के द्वारा 1952 में “माध्यमिक शिक्षा .आयोग” का गठन किया गया माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा शिक्षकों की नियुक्ति के लिए उचित मानदंडों की सिफारिश की गयी साथ ही माध्यमिक शिक्षकों के शिक्षक प्रशिक्षण हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। शिक्षकों के वेतनमान निश्चित करने के लिए एक विशेष समिति का गठन करने की सिफारिश की गयी जो समय-समय पर महंगाई को ध्यान में रखकर निश्चित स्तर के शिक्षकों के वेतनमान निश्चित करे तथा समान योग्यता और समान कार्य करने वाले शिक्षकों के वेतनमान समान हो, चाहे वो किसी भी प्रकार के विद्यालय में कार्यरत हो ताकि उनके समायोजन में किसी प्रकार की बाधा न पड़े। राष्ट्रीय

शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग) 1965-66 द्वारा भी शिक्षकों के समायोजन हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए गये।

समाज के विकास में विद्यालयों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। इसी प्रकार विद्यालयों में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। विद्यालयों में शिक्षा प्रक्रिया द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास करने का प्रयास किया जाता है।

समाज में नित नये परिवर्तन दृष्टिगोचर होते रहते हैं। नवीन परिस्थितियों, आवश्यकताओं एवं अन्वेषणों के तदनुरूप बदलते समय एवं ज्ञान के साथ समाज में तादात्म्य स्थापित करना होता है, साथ ही समाज को यह व्यवस्था करनी होती है कि परिवर्तन शील दशाओं में उसकी भावी पीढ़ी जो उसका भविष्य है, कुसमायोजित होकर अनुपयोगी न हो जाये। इस हेतु ही शिक्षण व्यवस्था की रचना कर समाज ने उसे शिक्षकों के हाथों में सौंप दिया है। शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप में चलाने हेतु शिक्षकों का समायोजित होना भी अति आवश्यक है।

भारत सरकार द्वारा भारतीय संविधान में अनुच्छेद 21 ए जोड़कर बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। भारत सरकार द्वारा शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु समय-समय पर कई शैक्षिक कार्यक्रम जैसे:- शिक्षा गारंटी योजना, मध्याह्न भोजन योजना, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम आदि चलाये गये। इस प्रकार के कार्यक्रमों की सफलता एवं क्रियान्वयन हेतु सरकार द्वारा भरसक प्रयास किया गया परन्तु इनमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकी इन योजनाओं के पूर्ण हो पाने या न हो पाने में अन्य कारणों के साथ-साथ अध्यापकों के समायोजन की भी भूमिका होती है। अध्यापकों का सही रूप से समायोजित न हो पाना, जहाँ उनकी कार्य क्षमता पर प्रभाव डालता है, वहीं दूसरी ओर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है।

**उद्देश्य:-** प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य- “माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन करना।”

**न्यादर्श:-** प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि के रूप में सहारनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है। इस समष्टि में से न्यादर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालयों के 100 अध्यापकों (50 ग्रामीण व 50 शहरी) का उद्देश्य परक न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

**सीमांकन:-** प्रस्तुत अध्ययन को सहारनपुर जनपद के विद्यालयों के शिक्षकों तक सीमित किया गया है।

**उपकरण:-**

प्रस्तुत अध्ययन हेतु डॉ. एस.के. मंगल द्वारा निर्मित “मंगल शिक्षक समायोजन परिसूची (लघुरूप)” (Mangal Adjustment Inventory Short Film) का प्रयोग प्रदत्तों के संकलन हेतु किया गया। इस समायोजन परिसूची का निर्माण भारतीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन या कुसमायोजन का निर्धारण करने हेतु किया गया है। इस परिसूची में कुल 70

पद है। जिनका उत्तर दो विकल्प हां या ना के रूप में देना है। लेखक द्वारा इस परिसूची का निर्माण क्रमबद्ध रूप में एवं अत्यन्त सावधानी पूर्वक किया गया है। ये एक मानकीकृत परिसूची है।

### प्रदत्तो का विश्लेषण, परिणाम एवं विवेचना:-

डॉ.एस.के. मंगल द्वारा निर्मित समायोजन परिसूची को ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की माध्यमिक विद्यालयों के 100 अध्यापकों (50 शहरी व 50 ग्रामीण) पर प्रसारित किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा करने पर प्राप्त परिणामों को तालिका क, ख, ग में प्रदर्शित किया गया है।

#### अध्यापकों का समायोजन प्रदर्शित करती तालिका (ग्रामीण अध्यापक)

##### तालिका “क”

समायोजन का विवरण	अध्यापकों का प्रतिशत
बहुत अच्छा	30 प्रतिशत
अच्छा	50 प्रतिशत
औसत	16 प्रतिशत
निम्न	4 प्रतिशत
अत्यधिक निम्न	0 प्रतिशत

#### अध्यापकों का समायोजन प्रदर्शित करती तालिका (शहरी अध्यापक)

##### तालिका “ख”

समायोजन का विवरण	अध्यापकों का प्रतिशत
बहुत अच्छा	40 प्रतिशत
अच्छा	44 प्रतिशत
औसत	16 प्रतिशत
निम्न	3 प्रतिशत
अत्यधिक निम्न	0 प्रतिशत

#### अध्यापकों का समायोजन प्रदर्शित करती तालिका (पुरुष एवं महिला अध्यापक)

##### तालिका “ग”

समायोजन का विवरण	अध्यापकों का प्रतिशत
बहुत अच्छा	35 प्रतिशत

अच्छा	47 प्रतिशत
औसत	14.5 प्रतिशत
निम्न	3.5 प्रतिशत
अत्यधिक निम्न	0 प्रतिशत

### विवेचना:-

तालिका “क” में स्पष्ट है कि ग्रामीण अध्यापकों में 30 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन अपने शैक्षिक परिवेश में बहुत अच्छा पाया गया। 50 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन अच्छा, 16 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन औसत स्तर का पाया गया तथा 4 प्रतिशत अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित पाए गए। कोई भी ग्रामीण परिवेश का अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित नहीं पाया गया।

तालिका “ख” से स्पष्ट है कि शहरी अध्यापकों में 40 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन अपने शैक्षिक परिवेश में बहुत अच्छा पाया गया। 44 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन अच्छा, 13 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन औसत स्तर पर पाया गया तथा 3 प्रतिशत अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित पाए गए। शहरी क्षेत्र का कोई भी अध्यापक अत्यधिक निम्नस्तर पर समायोजित नहीं पाया गया।

तालिका “ग” से स्पष्ट कि माध्यमिक स्तर के अध्यापकों (ग्रामीण व शहरी) में 35 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन अपने शैक्षिक परिवेश में बहुत अच्छा पाया गया। 47 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन अच्छा, 14.5 प्रतिशत अध्यापकों का समायोजन औसत स्तर का पाया गया तथा 3.5 प्रतिशत अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित पाए गये।

### निष्कर्ष:-

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकतर ग्रामीण व शहरी परिवेश के विद्यालयों के अध्यापकों ने अपने-अपने में सही प्रकार से समायोजन कर रखा है तथा जिन अध्यापकों का समायोजन कम आया है। उसका कारण विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध न होना है।

विद्यालय प्रबंधन तथा ग्रामवासियों का विद्यालय में अनावश्यक दखल देना, कुछ अध्यापकों का अन्तर्मुखी होना, अपने सम्मान के प्रति संदेहप्रद रहना, विद्यालयों का मुख्य मार्ग से दूर होना (महिला अध्यापकों के सम्बन्ध में) आदि प्रमुख है। इनके अतिरिक्त अध्यापकों द्वारा छात्र-वृत्ति, मिड-डे-मिल (कक्षा 6 से 8) विद्यालय रख-रखाव आदि के कारण भी अध्यापकों को समायोजन में कठिनाई होती है। छात्र-छात्राओं की कम उपस्थिति, विद्यालयों में शौचालयों का अभाव, विद्यालयों में विद्युत का अभाव, पर्याप्त संख्या में शिक्षकों का न होना, अभिभावकों का सक्रिय सहयोग न मिलना भी समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक पाए गये जिनके कारण अध्यापकों का समायोजन प्रभावित होता है।

तालिका “क” व “ख” की तुलना करने पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के समायोजन में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं होता है परन्तु कुछ एक बिन्दुओं जैसे शौचालयों की कमी, विद्यालयों का मुख्य मार्ग से दूर होना आदि ग्रामीण शिक्षकों के समायोजन को शहरी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

उक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि वर्णित समस्याओं से निजात पाकर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन को बेहतर बनाया जा सकता है तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि को भी बेहतर बनाया जा सकता है क्योंकि बेहतर रूप से समायोजित शिक्षक ही छात्र-छात्राओं को बेहतरीन शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

शिक्षा प्रशासकों, प्रबन्धकों, नियोजकों, अभिभावकों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए ताकि शिक्षा की मजबूत नींव पड़ सके। महिला शिक्षकों को अनुकूल वातावरण प्रदान करना, छात्र-छात्राओं की उपस्थिति को बढ़ाना, अध्यापकों से मूल विषयों का अध्यापन करवाना, अध्यापकों के सामने आने वाली समस्याओं को प्रशासकों, नियोजकों, स्थानीय जिम्मेदार व्यक्तियों, अभिभावकों व अध्यापकों द्वारा मिलकर दूर किया जा सकता है।

#### सन्दर्भ:-

- भारतीय आधुनिक शिक्षा, यादव सतीश कुमार-“अध्यापक शिक्षा-समस्या व चुनौतियाँ” 30 (2) 79-85, एन.सी.ई.आ.टी., नई दिल्ली, 2009।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, रायजादा रमाकर, एन.सी.ई.आ.टी., नई दिल्ली, 2010।
- शिक्षा मनोविज्ञान, माथुर एस.एस., विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2000।
- शिक्षा मनोविज्ञान, सिंह अरुण कुमार, बनारसीदास मोतीलाल प्रकाशन, पटना, 2010।
- अनुसंधान विधियाँ-व्यवहार परक विज्ञानों में, कपिल एच.के.एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा, 2012।
- एडवांस एजुकेशन साइकोलॉजी, मंगल एम.के, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लि., नई दिल्ली, 2011।
- शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, गैरेट, हेनरी ई., कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1995।

# हिन्दी सिनेमा: समय, संस्कृति और भाषा

डॉ. जीत सिंह

एसो. प्रो. हिन्दी

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, बादलपुर (गौ.बु.नगर)

## सारांश

“साहित्य समाज का दर्पण है” यह सर्वमान्य कथन है किन्तु आधुनिक युग में साहित्य की यह धारा परिवर्तित होकर हिन्दी सिनेमा का रूप धारण कर चुकी है तथा कल्पनाशीलता के समिश्रण के साथ हिन्दी सिनेमा समाज का दर्पण बनता जा रहा है बहुविध आलोचनाओं के साथ-साथ यह भी स्वीकारणीय तथ्य है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार, लोकप्रियता और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को पहचान दिलाने में हिन्दी सिनेमा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

## मुख्य शब्द

**हिन्दी सिनेमा, लोकप्रियता, संस्कृति, समाज, सम्प्रेषण, प्रतिबिम्ब, विश्वव्यापी भूमिका**

भारतीय कला विधाएं प्रत्येक युग में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही हैं। इन कला विधाओं में निरन्तर नए-नए प्रयोग होते रहे हैं और उसमें परिमार्जन भी होता रहा है ऐसी ही एक कला विधा है जो सर्वाधिक प्रचलित है, वह है- सिनेमा।

सिनेमा का इतिहास बहुत पुराना न होते हुए भी इतने कम समय में समाज को जिस तरह प्रभावित किया है, वह अकल्पनीय है।

सिनेमा हमारे सामाजिक जीवन को इस तरह प्रभावित किया है कि हम उसी के काल्पनिक दुनियाँ में सैर करते हुए वास्तविक धरातल की तलाश करते हैं। सिनेमा न केवल समाज को बल्कि समाज के प्रत्येक बिन्दुओं को अपनी ओर आकर्षित किया है चाहे वह हमारी संस्कृति हो, जीवन शैली हो, साहित्य हो, परम्परा हो या आर्थिक व्यवस्था सबको नया आयाम दिया है।

हिन्दी सिनेमा आरम्भ से ही एक सीमा तक समाज का आईना रहा है जो समाज की गतिविधियों को रेखांकित करता आया है। पिछले पांच दशकों की बात करें तो देखने को मिलेगा कि हिन्दी सिनेमा ने शहरी दर्शकों को ही नहीं गाँव के दर्शकों को भी प्रभावित किया है। आज हिन्दी के व्यापक लोकप्रियता और इसे संप्रेषण के माध्यम के रूप में मिली आम स्वीकृति किसी संवैधानिक प्रावधान या सरकारी दबाव के परिणाम नहीं है। मनोरंजन और सिनेमा की दुनिया ने इसे व्यापार और आर्थिक लाभ की भाषा के रूप में जिस तरह विस्मयजनक रूप से शनैः शनैः स्थापित किया है उससे हिन्दी सिनेमा निश्चित ही हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार में अपनी विश्वव्यापी भूमिका निर्वाह कर रहा है। उनकी यह प्रक्रिया अत्यंत सहज, बोधगम्य, रोचक, संप्रेषणीय और ग्राह्य है।

सिनेमा में वही प्रतिबिम्बित होता है जो समाज में घटता है या घट रहा होता है। शायद इसी कारण इसे समाज का दर्पण कहा गया है। एक अति महत्वपूर्ण परिवर्तन सिनेमा के क्षेत्र में यह हुआ कि 7 जुलाई 1896 ई. को जब ल्यूमियरे भाइयों कर सिनेमैटोग्राफी ने पहली बार छह मूक लघु फिल्मों का प्रदर्शन बंबई के वाटसन होटल में किया तो किसी ने सोचा भी नहीं था कि यह प्रदर्शन भारतीय मनोरंजन (सिनेमा) में एक मील का पत्थर साबित होगा। इसी के पश्चात भारत में पहली बार किसी भारतीय (हरिश्चन्द्र भटवाडेकर) ने सेल्यूलाइड कैमरे का प्रयोग कर दो लघु फिल्मों को शूट कर उन्हें प्रदर्शित किया। इसी से भारत में चलती-फिरती फिल्मों की शुरुआत हुई।

भारत में सिनेमा की शुरुआत 1913 ई. में 'धूंडीराज गोविन्द फाल्के' की फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' से हुई। यह प्रथम भारतीय ध्वनि रहित फिल्म थी और इसी फिल्म के निर्माण स्वरूप 'दादा साहब फाल्के' को भारतीय सिनेमा का पितामह स्वीकार किया गया। इस फिल्म के अतिरिक्त दादा साहब फाल्के ने 'भस्मासुर मोहनी', 'सत्यवान सावित्री' और लंकादहन जैसी धार्मिक परम्परा से सजी समाज को प्रभावित करने वाली फिल्मों का निर्माण किया। भारत में पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनी जिसके निर्माता इंपीरियल फिल्म कंपनी और निर्देशक अर्दरशीर ईरानी थे। यह फिल्म 14 मार्च 1931 को बंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में रिलीज हुई। इस बोलती फिल्म ने सिनेमा के पूरे तौर-तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया। बोलती फिल्मों के क्रेज के कारण ही 1935 ई. के बाद मूक फिल्मों का बनना भारत में लगभग खत्म सा हो गया। हिन्दी सिनेमा की कोई भी कहानी क्यों न हो उसमें समाज, संस्कृति और मानवता का वास्तविक स्वरूप अवश्य दिखाया जाता है चाहे वह कितनी भी काल्पनिक क्यों न हो किन्तु उसकी पृष्ठ भूमि समाज पर ही आधारित होती है।

हिन्दी को विश्व स्तरीय पहचान दिलाने में हिन्दी सिनेमा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। यह एक ऐसे माध्यम के रूप में हमारे बीच है, जो अपने आप में कई कलाओं और संस्कृतियों को समेटे हुए है। 'डॉ. पीटर बारानिकोव' के अनुसार- "हिन्दी सिनेमा ने रूस और दूसरे देशों में भी लोगों को हिन्दी से जुड़ने का काम किया है।"

समय के साथ-साथ हिन्दी सिनेमा की तस्वीर भी बदल रही है। आज फिल्मों को लेकर नये-नये प्रयोग ज्यादा हो रहे हैं। जब हिन्दी फिल्मों का सफर शुरू हुआ तो हिन्दी भाषा अपने असली रूप में थी पर आज 'पानसिंह तोमर', 'उड़ता पंजाब', 'तनु वेड्स मनु', 'गैंग्स ऑफ बसेपुर' जैसी फिल्मों में हिन्दी के साथ ही क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल होने लगा अब फिल्मों में भारत के अलग-अलग राज्यों की भाषा की सोंधी खुशबू आती है। यह एक अच्छी बात रही है कि हिन्दी के साथ उर्दू का समावेश करके सिनेमा को एक नया प्रभाव देने की कोशिश की गयी है। वह स्वागत्य भी रही क्योंकि उर्दू तहजीब की भाषा है। उसका अपना परिमार्जन है। फिल्मों में संवाद लेखन करने वाले, गीत लेखन करने वाले, उर्दू के साहित्यकार, शायरों का भी लम्बे समय बने रहना और सफल होना इस बात को प्रभावित करता है कि दर्शकों ने इस नवोन्मेष का स्वागत किया।

हालांकि साहित्यकारों में मुंशी प्रेमचन्द से लेकर अमृतलाल नागर, गोपालदास 'नीरज',



शरद जोशी, फणिश्वरनाथ 'रेणू' आदि का सरोकार भी हिन्दी सिनेमा से जुड़ा। वक्त-वक्त पर ये विभूतियाँ हिन्दी सिनेमा का हिस्सा बनीं। 'नीरज' जी ने देवआनन्द के लिए अनेक गीत लिखे। 'शरद जोशी' ने फिल्मों और संवाद लिखे, 'रेणु' की कहानी पर 'तीसरी कसम' फिल्म बनी, अमृतलाल नागर की बेटी डॉ. अचला नागर ने 'निकाह' से लेकर 'बागवान' जैसी यादगार फिल्मों लिखीं। 'मन्नू भण्डारी' और 'राजेन्द्र यादव' की कृतियों पर फिल्मों बनीं, पण्डित भवानी प्रसाद मिश्र दक्षिण में लम्बे समय तक एवीएम के लिए लिखते रहे लेकिन सकारात्मक विचारों की विरुद्ध प्रतिरोधी विचार ज्यादा प्रबल था लिहाजा वही काबिल हुआ।

'मण्डी', 'जुनून', 'भूमिका', 'निशान्त', 'अंकुर' जैसी फिल्मों हमें इस बात का भरोसा दिलाती हैं कि कम से कम एक लड़ाई भाषा के सम्मान के लिए प्रबुद्ध साहित्यकारों, लेखकों और कलाकारों द्वारा जारी रखी गयी। यह काम फिर उनके समकालीनों में, सुधीर मिश्रा, प्रकाश झा, केतन मेहता, सईद अख्तर मिर्जा ने भी किया।

बी.बार. चोपड़ा की 'महाभारत' के संवाद लेखन में 'डॉ. राही मासूम रजा' के योगदान को सभी याद करते हैं। इसी तरह रामानन्द ने भी 'रामायण' धारावाहिक बनाते हुए उसके संवादों पर विशेष जोर दिया। इसी तरह हिन्दी सिनेमा में फिल्म-संगीत भी देश को सही मायने में एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है। लोक संस्कृति से संबंधित गानों का महत्व इसलिए भी बढ़ा कि इसमें सच्चाई होती है, पीड़ा होती है, उल्लास होता है और यह हमारी संस्कृति की जड़ों से भी जुड़ी होती है। यही दर्द और उल्लास 'मदर इंडिया' के गीतों 'दुख भरे दिन बीते रे भैया, सुख के दिन आयो रे', 'पिय के घर आज प्यारी दुल्हनियाँ चली', 'घूँघट नहीं खोलूँगी सईया तेरे आगे आज मैं' में लोकधुनों का ऐसा सामंजस्य मिलता है जो आज भी सर चढ़कर बोलता है। 'हीर-रांझा' और 'लैला-मजनू' के गीतों में पंजाब की मस्ती दिखाई देती है तो 'बाँबी' (1973) के 'न मांगू सोना चांदी, न मांगू हीरा मोती', 'झूठ बोले कौआ काटे काले कौवे से डरियो' जैसे गीतों में गोवा के मछुवारों की बिंदास जिंदगी का रूप दिखाई देता है। 'नदिया के पार' (1982) के सभी गीतों, 'सांची कहे तोरे आवन से हमरे अंगना में आइल बहार भौजी, 'जब तक पूरे न हो फेरे सात तब तक दुल्हन नहीं दूल्हा की', कौन दिशा में ले के चला रे बटोहिया जरा ठहर-ठहर ये सुहानी सी डगर' में अवधी और भोजपुरी के लोकगीत का पुट दिखाई देता है। हिन्दी सिनेमा के इसी रूप में समाज के अन्य राज्यों को भी हम आसानी से इन गीतों के माध्यम से समझ लेते हैं जैसे- 'मैंने प्यार किया' के गीत 'कहे तोसे सजना तोहरी सजनियाँ' में पूर्वांचल की छाप दिखाई देती है तो 'चाँदनी' (1989) के गीत 'मैं ससुराल नहीं जाऊँगी डोली रख दो कहारो' 'लगी आज सावन की सुनहरी घटा है' में भी लोक संस्कृति की झलक दिखाई देती है। 'हिना' 'फिजा' और 'मिशन कश्मीर' के गीतों में कश्मीर की लोक धुन सुनाई देती है। 'शूल' के गीत 'दिलवालों के दिल का करार लूटने, आई हूँ यूपी बिहार लूटने' इसी तरह 'बंटी और बबली' का 'कजरारे-कजरारे तोरे कारे-कारे नैना' पर जहाँ पूर्वांचल का प्रभाव है तो 'देलही 6' के गीत- 'ससुराल गेंदा फूल' और 'मसकली-मसकली' पर छत्तीसगढ़ का प्रभाव है। दबंग के गीत 'मुन्नी बदनाम हुई' और 'ओमकारा' के गीत 'बीड़ी जाइले....।' 'दबंगब 2' के गीत 'फेविकौल से' और हाल ही में प्रदर्शित 'प्रेम रतन धन पायो' के गीत.... 'सईया तू कमाल का और तेरी बातें भी कमाल

की' पर भी लोकधुन की छाप दिखाई देती है।

हिन्दी सिनेमा ने जहाँ लोक संस्कृति को बढ़ाने में अपना योगदान दिया है ठीक उसी तरह लोक परम्परा, लोक-कला और लोक संस्कृति में हिन्दी सिनेमा के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हिन्दी सिनेमा का प्रभाव ही है कि किसी खास जगह के लोक-त्यौहार और उत्सव भारत के हर हिस्से में मनाया जा रहा है। आज लोक संस्कृति को ध्यान में रखकर सिनेमा के पटकथा लिख रहे हैं तो यह भारतीय लोक संस्कृति के लिए सुखद अनुभूति है।

वस्तुतः हिन्दी सिनेमा शुद्ध मनोरंजन प्रधान होता है जिसमें दर्शकों की मांग का ख्याल रखा जाता है। हिन्दी सिनेमा का फलक इतना विस्तृत है कि वो संसार के सारे कलाओं को अपने आप में समाहित किए हुए है। हिन्दी सिनेमा के गीतों के मूल्यांकन का सवाल रहा है।

हिन्दी सिनेमा के बीच रचनात्मक, बहुआयामी, लोकप्रिय और प्रभावी होकर भी गंभीर चर्चाओं के दायरे में नहीं रहे हैं। हिन्दी सिनेमा की आत्मा गीतों में ही बसी है परन्तु हिन्दी फिल्मों के सफर में गीतों की गुणवत्ता समय के साथ बदलती रही है। जैसा कि अलीगढ़ में वीन पटेल से 'हिन्दी सिनेमा' पर हुई बातचीत में पद्म विभूषण 'गोपाल दास' 'नीरज जी' कहते हैं कि- "पहले फिल्मों के गाने अलग गाए जाते थे। गायक को शूटिंग के समय ही गाना पड़ता था। अब नई तकनीक का जमाना है, गायक अपने माफिक आते-जाते और गाते हैं फर्क ये पड़ा कि आज के गाने कब रीलजिज हुए और कब लापता, कुछ पता नहीं चलता। बोल तक समझ नहीं आते गानों के। शुरूआती हिन्दी सिनेमा भले ही तकनीकी रूप से कमजोर था लेकिन कला में जान थी। साहित्यकार ही फिल्मों के लिए लिखा करते थे। कविता सो उद्देश्य लिखी जाती थी। गाने भी शानदार होते थे। आज तो क्लासिकल पहलू गायब ही होता जा रहा है सिनेमा से। आज की फिल्मों में सेक्स जरूरी हो गया है, कुछ खुलापन पहले भी था लेकिन अब अति हो गई है। सब्जेक्ट का संकट है सिनेमाघर भी। नई पीढ़ी, समाज, बाजार, ड्रेस.. सब कुछ तो बदल रहा है फिर फिल्में कैसे खुद को बचा पाती। फिर भी हिन्दी सिनेमा के 100 साल की ये तारीख गवाही देती है कि अच्छी फिल्मों का दौर चूक नहीं गया है। आज भी अच्छी फिल्में बन रही हैं। कुछ नाम गिनाऊँ तो... 'मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस.', 'लगे रहो मुन्ना भाई', तारे जर्मी पर, 'श्री इंडियट्स' जैसी है ही। जल्दी ही फिल्मों के इस भोंडापन से लोग ऊब जाएंगे। नई सुबह ऐसी आएगी जब फिल्में फिर कहेंगी... 'ऐ भाई जरा देख के चलो....'

**सन्दर्भ -**

1. जनकृति अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका-वर्ष 3, अंक 25-26, मई-जून 2017
2. आजकल: मई- 2016
3. हिन्दी सिनेमा का सच- मृत्युंजय (वाणी प्रकाशन, 21-ए दरियागंज नई दिल्ली)
4. सिनेमा के चार अध्याय-डॉ. टी. शशिधन (वाणी प्रकाशन, 21-ए दरियागंज नई दिल्ली)
5. परिवर्तन- वर्ष-1, अंक-3, जुलाई-सितम्बर, 2016
6. परिकथा- वर्ष 12, अंक-71, द्विभाषिक, नवम्बर-दिसम्बर, 2017

# LEADERSHIP & ETHICS

Dr. Aparna Sharma  
Assi. Prof.  
AIESR AMITY University  
Noida

## ***Abstract***

The word Ethics sounds amusing in the world of materialism, where the people are not having any concern for the idealistic life. Money is all that matters. In this scenario we need the leaders with ethical bent of mind. But the question is do we call our leaders of today as leaders? In majority the answer is no. The reason behind this no is that somewhere or the other they are not satisfying our expectation of ideology. We are not finding as if they are working for our cause. The reason in the background is the lack of ethics.

Since ages the leaders of all fields are considered to be the perfect and sensitive people who can fight for another's cause, and the one who is ethical can do it best. Rather we can say that leadership and ethics go hand in hand. One can only feel to fight for justice when values are there. This lesson of life starts at an early stage of upbringing and the outcome is welfare of the society.

## **Keywords**

### **Leadership, Ethics**

Globalization has poured too much of competition among the human beings. Every person is craving to be the best. In this cut throat competition people are engaging into unethical practices and have become too much materialistic. Every player in the Global industry is aiming to prove themselves and to achieve their high set goals; and for this they require high quality of ethical leadership, who can guide them towards their goals. However in the era of Nano technology, the word ethics is decorating the idealistic articles and books only; it brings amusement to the faces and a person who speaks about ethics is considered to be outdated or below standard. In fact people talking about ethics are often themselves unethical. In this crucial phase where people are craving for ethical leadership, it is very important to ponder over the relevance of ethics in life and then in leadership.

The Latin word 'ethicus' and the Greek word 'ethikos' from which the word ethics has been derived means character or manners. It tends to define how individuals choose to interact with one another. It can be extended to imply systematizing, defending and recommending concepts of right and wrong behavior. In philosophy, ethics define what is good for the individual and for society and ratifies the nature of duties that people owe to themselves and to one another. Ethics is thus said to be

the science of moral, moral principles and recognized rules of conduct. Ethics are the values inculcated to our conscious and latent mind, both from the time of our understanding to the outer world. Philosophers viewed ethics as a system of moral principles and the methods for applying them. It deals with values relating to human conduct with respect to the right and wrong of certain actions and to the goodness and badness of the motives and ends of such actions.

Ethics is a subject that deals with human beings. Humans by their nature are capable of judging between right and wrong, good and bad. It is a normative science, i.e. a guide or control of action; so, normative ethics tells us what we ought to do and what not to do. Its objective is to set a standard code for the moral behavior and make recommendations about the desired behavior.

On the other hand Leadership has been described as the process of social influence in which one person can enlist the aid and support of others in the accomplishment of a common task. It is ultimately about creating a way for people to contribute to make something extraordinary happen. It involves authority and responsibility in terms of deciding the way ahead and being held responsible for the success or failure in achieving the agreed objectives. It involves the application of certain values. Leadership based on moral principles requires that followers be given enough knowledge of alternatives to make intelligent choices when it comes to responding to a leader's proposal.

**Leadership values can be classified as;**

1. Ethical virtues: old fashioned character tests such as sobriety, chastity, abstinence, kindness, altruism and other;
2. "Ten commandments" rules of personal conduct such as honesty, integrity, trustworthiness, reliability, reciprocity, accountability;
3. Moral values such as order or security, liberty, equality, justice, community (meaning brother hood and sisterhood).

Leadership is all about resolving paradoxes and crises in the absence of clear knowledge on where to draw a line. Great leaders try to anticipate changes they encourage group members not to use the best practices of others as benchmarks but to find innovative solutions so that others will use their practices as their own benchmarks. Leaders know what they value. They also recognize the importance of ethical behavior. The best leaders exhibit both their values and their ethics in their leadership style and actions. In leadership ethics and values should be visible. As a leader, one should choose the values and the ethics that are most important, the values and ethics one believes, in defining an individual's character. One has to live them visibly every day at work. Living values is one of the most powerful tools

available to help one lead and influence others.

Ethical values are crucially important to leaders whether in politics, education or other fields. A question which emerges is that, why there is a need for ethics? Are the people unable to carry on their tasks without ethics? No, it is not so, rather the ethics impart us the confidence as normative theory says that ethics is righteous and result in good. It could be said that ethics form the base of a lifestyle and ultimately provides firm and reputed status in society. So it is an essential feature of leadership as leaders are always respected for their positive reputation. Since ages to the modern society, if there is a mention of leaders, ethical values remain common. Even if the leaders involve in wrong practices for a while they were having ground to make it just. From Gautam Buddha, Ashoka, Akbar to Mahatma Gandhi, Chandrashekhar Azad, Rajeev Gandhi and so on.....ample of examples are there with an inseparable combination of ethical leadership. The value of ethics in leadership itself becomes clear when at a very small level it is there. Like in a class room, a teacher could be termed as leader and he/she has to be ethical to lead, only then the students follow their command.

Adherence to values and principles is an essential feature of traits of leadership. Moral leadership is based on the reality that we cannot violate these natural laws with impunity. They have been proven effective throughout centuries of human history. Individuals are more effective and organizations more empowered when they are guided and governed by these proven principles. They are not easy, quick fix solutions to personal and interpersonal problems. Rather they are foundational principles that when applied consistently become behavioral habits enabling fundamental transformations of individuals, relationships and organizations.

The authors of moral intelligence describe the importance of moral intelligence as: "Moral intelligence directs our other forms of intelligence to do something worthwhile. Moral intelligence gives the life a purpose. Without moral intelligence, one would be able to do things and experience events, but they would lack meaning." And they promise: "the more one develop moral intelligence, the more positive changes he/she will notice, not only in work but in personal well-being too." Staying true to moral compass will not eliminate life's inevitable conflicts. The evidence is clear – moral intelligence plays a major role in overall success. The authors of Moral Intelligence believe that good morality and high performance do not come together just by accident. They claim that successful leaders always attribute their accomplishments to a combination of their business savvy and their adherence to a moral code.

The need for leadership was never so great. A chronic crisis, that is, the pervasive incapacity of organizations to cope with the expectations of their constituents is now an overwhelming factor worldwide. The new leader is one who commits people to

action who converts followers to leaders and who may convert leaders into agents of change. To survive in this world one needs to gain success in all the aspects of life. It is not necessary for everyone to have the traits of leadership but then they are essential for materialistic success. In order to achieve desired place in society and to make our dreams come true a combination of leadership and ethics is must. Rather it could be said that leadership with ethical bent of mind is the clarion call for today's world. One needs a balance of materialism and solace in life. Leadership traits are fulfilling the material aspect and ethics are responsible for solace in life.

Some important characteristic features of leadership are; a leader must have followers, there must be working relationship between the leader and his followers, the leader by his personal conduct must set an ideal before his followers, there must be community of interests between the leader and his team workers.

In modern concept the leader attempts to draw out the best in his followers by training them to share the leadership with them. Leadership is a dynamic process. Its important functions are to guide and motivate the behavior of subordinates in furtherance of the objectives of the organization, to understand the feelings of the subordinates and their problems as the plans are translated into action.

No two individuals behave in the same manner. They have different values and personality variables and rather various moderating variables like individual characteristics, structural design of organization the culture of workplace and the intensity of ethical issue determine that whether a person will act in an ethical or unethical manner. But then this is the case of general masses or managers not of leaders. Leaders are supposed to be ethical and if they have to go unethical as per the rules of organization then also they have to lead the revolutionary side of the employees/ subordinates to fight against the injustice of the workplace. It is very clear that a logical and ethical reason is always there with the class of leaders, rests of the people are managers who by some means or the other manage the internal and external tasks.

Gandhi and Tagore, two types entirely different from each other and yet both of them typical of India, both in the long line of India's great men.....it is not so much because of any single virtue but because of the tout ensemble, that is felt that among the world's great man today. Gandhi and Tagore were supreme as human beings. That means that the personalities can differ but their emergence as a leader, their potential of having followers needs a simple and ethical way out to deal up with major and minor issues of the day to day life. It could be said then, that to be a leader one needs to go with ethical / righteous lifestyle.

With leadership goes power like; legitimate power comes from the authority in the organization, expert power is the power of knowledge and skill, charismatic

power is the power attraction or devotion, reward power i.e. the ability to reward worthy behavior and performance, coercive power is the ability to threaten or punish. Wise leadership uses power in the best interest of the people related to it. Power comes by virtue of what we deeply are and do, and every great leader is a silent but eloquent witness to the fact that his power is derived from his devotion, his loyalty and his helpfulness to his followers in a common and important cause. Leadership is an influence, interaction process between the leader and his group of followers / subordinates. Leadership is an interpersonal and a social process. The one who happens to hold the sway over some of the attitudes, actions and behavior of a set of people compromise his constituency.

Bhagawat Gita states that, “the one who controls the senses by the trained and purified mind and intellect, and engages the organs of action to selfless service is considered superior”, i.e. moral leadership is powerful and it can work wonders. Leadership has a moral component that is centrally important to all other aspects of leadership, because few people will trust a leader who has lied, embezzled, or hurt others. It has its roots deep within a person's belief and value structures. It begins with a powerful vision which is necessary to sustain leadership effectiveness. A vision that sets the leader on fire distinguishes that person from the followers. Leadership is characterized by the ability to bring out significant change in vision, strategy and culture as well as promote innovation in products and technologies.

Ethics has a province of its own, yet it is not entirely divorced from all other departments of study. It has indirectly to treat the several problems which are psychological, philosophical, sociological and political in nature. The psychological problems with which ethics is concerned are those of the nature of voluntary actions, classification of the springs of actions and the relation between desire and pleasure. The philosophical problems are those of essential nature of human personality, the freedom of the will, immortality of the soul, existence and perfection of God, and the moral government of the universe. The sociological problem is that of the relation of the individual to the society. The political problem is that of the relation of the individual to the state, of the ethical basis and moral functions of the state, and of international morality.

To handle these problems we need people with ethical leadership, so that the various phases of life could witness prosperity in society. Leadership is the quality of a person which can transform an ordinary to an extraordinary. This quality is must for any field of life, whether it is a battlefield, playground, business establishment or a college students association.

Though ethics is not a practical science, it deduces concrete duties and virtues from the notion of the Supreme good, which may guide us in the regulation of our

conduct. Ethics is theory of morality. It converts moral faith into a rational insight. It criticizes the common notions of morality and discovers the rational and essential elements in them. In the latest scenario there is need of rational perspective.

Ethics indirectly exerts a paramount of influence on all departments of our practical life. The right solution of the vital problems of religion, politics, economics, legislature, education etc. depends upon the correct notions of right and wrong. Religion must have foundations in ethics. Divorced from morality, it degenerates into superstitious belief in blind superhuman power, black magic and the like. Politics should be molded by ethics. Might should be based upon right and immoral laws should be abolished. Laws should be enacted for the improvement of the moral well being of the people. Economics should be based on ethics. Production, distribution and consumption of wealth should be based on justice and equity. In education ethics is to decide what impulse and disposition in children should be strengthened and what should be suppressed. Ethics should embrace all departments of human action, exert an elevation influence upon him, and raise humanity to higher level.

No doubt that to find such a sublime society the need of man power is there to implement those ethical values and concepts, in direct sense this could be said as the need of true leaders to complement their own workplace, and to lay the foundation stones of jovial world, freed of the personal, professional and social vices like greed, fear, dishonesty, suppression, terrorism, castism and above all in humanism. At last it could be said that ethical leadership is the need of hour, the only way-out to curb the mere materialism mentality and to initiate the concept of ethical world.

### **References:**

1. Business Ethics & Corporate Governance, Fed Uni (Federation of Universities), 2003.
2. [http://humanresources.about.com/od/leadership/a/leader\\_values.htm](http://humanresources.about.com/od/leadership/a/leader_values.htm)
3. <http://www.action-wheel.com/ethics-in-leadership.html>
4. Introduction to Management, ICFAI Center for Management Research, Hyderabad, 2004.
5. Joseph P T, SJ, EQ & Leadership, Tata McGraw Hill, New Delhi, 2007
6. Mishra Rajeev K, Personality Development, Rupa & Company, New Delhi, 2004
7. Radhakrishnan S, 1999, Indian Philosophy, Vol.2, Oxford University Press, New Delhi.
8. Sen Amartya, 'The Argumentative Indians', Penguin Books, London, 2005.
9. Sinha Jadunath, A Manual of Ethics, New Central Book Agency, Kolkata, 1978.
10. Tripathi P C & Reddy P N, Principles of Management, Tata McGraw Hill, New Delhi, 2006.



## **INDOOR POTTED PLANTS: AIR POLLUTION MANAGEMENT SYSTEM**

*Manisha Bhati*

*Dr. Vinod K. Shanwal*  
*Head, Dept. of Education and Training School*  
*of Humanities and Social Science*  
*Gautam Buddha University*  
*Greater Noida*

### ***Abstract***

Air Pollution is considered as one of the life threatening challenges in Delhi/NCR. It is not only outside environment but also indoor environment that has a severe threat. Indoor air pollution is the degradation of inside air quality by harmful chemicals and other materials, it can be up to 10 times worse than the outside air pollution (Kankaria, 2014). This is because contained areas to allow potential pollutants to build up more than open spaces. Evidence also exists of associations with low birth weight, increased infant and prenatal mortality, pulmonary tuberculosis, cancer, cataract, and many more. The studies reveals that exposure to indoor air pollution may be responsible for nearly 2 million excess deaths in developing countries and for some 4% of the global burden of disease. The air cleaners could be one of the solutions to these problems but the cost, availability, use, comfort etc. make it more difficult. Moreover, some filters have been shown to improve symptoms of asthma. Further, the filtration systems and air purifiers do not reduce levels of all indoor air pollutants significantly, rather some types can actually aggravate the problem. A long-term and environment-friendly option is to bring indoor plants, especially those that are known to purify air more than others. 'Indoor' potted plants can remove air-borne contaminants such as volatile organic compounds (VOCs), over 300 of which have been identified in indoor air (Orwell, 2004). This paper provides an evidence based insight into how anti-pollution plants can help in building and maintaining cleaner indoor environment.

### ***Keyword***

**Air Pollution, Indoor Plants**

### ***Introduction***

Pollution is defined as the introduction of substances into the environment which can cause harm to humans and other living organisms. It is one of the greatest concerns of mankind.

According to US Environmental Protection Agency, air pollution is “the presence of contaminants or toxic substances in the air that hamper human health or welfare, or produce other harmful environmental effects.” (EPA, 2007). Clean air is the pri-

mary requirement to sustain healthy lives of humankind as well as the supporting ecosystems which in return affect the human wellbeing. There is a rise in release of various gaseous emissions and particulate matter (PM) due to rapid industrialized growth. Various kinds of pollutants produced by human activities enter into the atmosphere (called primary pollutants) and lead to the formation of new pollutants due to chemical reactions in the atmosphere (called secondary pollutants). Air quality has worsened in most of the large cities in India. Reasons behind this situation are population growth, industrialization and increased vehicle use.

Urban air pollution is majorly due to combustion of fossil fuels that are used in transportation, power generation, industrial sector, and other economic activities.

Indoor air pollution is said to be the degradation of indoor air quality by harmful chemicals and other materials; it can be up to 10 times worse than the outdoor air pollution. This is because enclosed areas enable potential pollutants to build up more than open spaces. Indoor air pollution (IAP), also known as Household air pollution (HAP), is a matter of great concern in rural spaces. This is because majority of this population continues to depend on traditional biomass for cooking and space heating and depend on kerosene or other liquid fuels for lighting, all of which are highly likely to lead to high levels of IAP. More than 70% of the population in India depends on traditional fuels like firewood, crop residue, cow dung, coal, lignite etc. for cooking and nearly 32% rely on kerosene for lighting purposes (TERI, 2015). According to World Health Organization, more than 40% of the global population depend on traditional biomass for the purpose of cooking (WHO, 2015). Whereas, in rural India, only 11.4% of the households use LPG for cooking (Census, 2011). Tobacco smoke, drying of food and fuel, insect control, lighting, flavoring of foods, and fires in open homes etc. further add to indoor air pollution.

In 1992, the World Bank named indoor air pollution in the developing nations as one of the four most severe global environmental problems (WHO, 2000). Daily averages of indoor pollution often exceed current WHO guidelines and standard levels. Although there are various number of separate chemical agents that have been recognized in the smoke from biofuels, the four most severe pollutants are formaldehyde, polycyclic organic matter, particulates and carbon monoxide.

In the past few years, air pollution of Delhi NCR is on rise. The situation is so bad that around Diwali festival, government is compelled to close schools and colleges due to high levels of smog. The winters are full of smog. People use masks and air purifiers for prevention from ill effects on health.

### ***Impact of indoor pollution on health***

The indoor air pollution leads to about 2 million premature deaths per year,

wherein 44% are due to pneumonia, 54% from chronic obstructive pulmonary disease (COPD), and 2% from lung cancer. Women and younger children are the most affected group, as they spend most of their time at home. The diseases associated with indoor air pollution are respiratory illnesses, viz., acute respiratory tract infection and COPD, poor perinatal outcomes like low birth weight and still birth, cancer of nasopharynx, larynx, lung, and leukemia. The formaldehyde is a dangerous chemical agent. Its harmful effects on health range from being an acute irritant, reducing vital capacity, causing bronchitis, pulmonary tuberculosis, cataract, to being a carcinogen causing leukemia and lung cancer. Tobacco smoke increases the risk of lung cancer. In developing countries, non-smokers, frequently women, form a much larger proportion of patients with lung cancer (Kankaria, 2014).

India has 20-28 million population suffering with asthma, out of which 10-15% are children, aged 5-11 years. Indian study on epidemiology of asthma, respiratory symptoms and chronic bronchitis in adults (INSEARCH), a groundbreaking epidemiological study conducted by the Indian Council of Medical Research (ICMR) found that the overall prevalence of asthma and chronic bronchitis is 2.05% (adults aged =15 years) and 3.49% (adults aged =35 years), respectively. The national burden of chronic bronchitis in this study was estimated to be 14.84 million (Vijyan, 2015).

### ***Particulate matter***

Pollutants are basically particulate matter and these are described by the “aerodynamic equivalent diameter” (AED). Particulate matter is subdivided into AED fractions based on how the particles are produced and where they deposit in human airways e.g: <10, <2.5, and <0.1  $\mu\text{m}$  (PM<sub>10</sub>, PM<sub>2.5</sub>, and PM<sub>0.1</sub>, respectively) (Vijyan, 2015).

Particles with a diameter greater than 10  $\mu\text{m}$  have a comparatively smaller suspension and are largely filtered out by the nose and upper airway.

Those with a diameter between 2.5 and 10  $\mu\text{m}$  (PM<sub>2.5-10</sub>) are categorized as 'coarse', less than 2.5  $\mu\text{m}$  as “fine,” and less than 0.1  $\mu\text{m}$  as “ultrafine” particles. Particles <10  $\mu\text{m}$  in diameter (PM<sub>10</sub>) are capable of entering the respiratory system, and particles <2.5  $\mu\text{m}$  (PM<sub>2.5</sub>) are capable of reaching the alveoli. Ultrafine particles or nanoparticles which translocate to the circulation directly after inhalation, may systemically affect the blood, vasculature and organs such as the heart and even the brain.

### ***Air Purifiers***

Air purifiers or air cleaners are devices that remove contaminants from the air in a room. They purify the air around us by filtering it.

A few purifiers are best for asthmatic people. Such purifiers make the air free from a wide range of particles so that the patients can inhale unadulterated air.

Air purifiers are of great use for cleaning the air around us, to prevent terrible scents from the air, removing restorative scents, cooking smell, and tobacco smoke too. Safeguarding room decor, ensuring furniture, decreasing maintenance and house-keeping are other few elements of air purifiers.

In India, air purifiers market is controlled by these major companies, namely- Kent RO Systems Ltd., Philips India Ltd., Eureka Forbes Ltd., Panasonic India Pvt. Ltd., Daikin Air conditioning Crusaders Technologies India Pvt. Ltd., Blueair India Pvt. Ltd., Atlanta Healthcare, India Pvt. Ltd., Sharp India Ltd., and Honeywell Automation India Ltd (Cision, 2017) The price of air purifiers ranges from Rupees 6000 to 50000.

The American Academy of Allergy, Asthma and Immunology Indoor Allergen Committee suggested in a 2010 report that allergists contemplate indoor air filtration to be part of a comprehensive strategy to improve respiratory health of an individual. Air purifiers with HEPA filters have been shown to improve symptoms of asthma. However, filtration systems and air purifiers do not decrease the levels of all indoor air pollutants, and some types can actually worsen the problem.

#### ***Disadvantages of Air Purifiers Constant maintenance***

Maintenance of an air purifier is required to use it for a long time. It has to be done often and regularly. And this kind of work would usually involve cleaning the air filter and changing its filters as often as required. Filters are to be changed after some time since they get too old or dirty to keep on using.

#### ***Electricity use***

This is another disadvantage to using an air filter for a continued period of time. This is because an air filter needs to be turned on constantly if you actually want to get any health benefits to using it. So you would have to keep an air filter on for at least several hours a day, to make it work properly. This continued use of an air filter can actually be rather expensive in the long run.

#### ***Ozone Emissions***

Some types of air purifier's especially electrostatic precipitators, ozone generators, and ionizers emit ozone into homes. Ozone is a colorless, unstable and toxic gas that has three oxygen atoms in each one of its molecules. The gas occurs naturally in the upper atmosphere, but it's a result of man-made smog. Ozone generating air purifiers purposely emit ozone gas to eliminate bacteria and chemicals in the air. In contrast, some electrostatic precipitators and ionizers emit ozone unintentionally as a result of their function (Devaney, 2017). These latter types of purifiers

electrically charge pollutants in the air to remove them. The charging process can result into ozone release. The California Environmental Protection Agency states that contact with ozone is harmful to cells in the lungs and airways. Side effects of exposure to the gas can comprise shortness of breath, coughing and chest tightness. Patients with asthma or other preexisting health conditions may experience increased symptoms of those conditions as a result of ozone exposure.

### ***Performance***

Air purifiers can not only worsen the quality of the air in home, but can also under-perform, and not provide all of that the manufacturer's claim (Devaney, 2017). There are various types of pollutants that can impact air quality, but unfortunately, most air purifiers are only effective against two or three. For example, while purifiers that use activated carbon air filters can eliminate odors, chemicals and gases (including smoke), they are unsuccessful against microorganisms and allergens. Also, while HEPA (high efficiency particle air) filtration purifiers can capture allergens, they are ineffective against odors, chemicals and gases, including smoke.

### ***An environment friendly solution: Indoor Potted Plants***

National Aeronautics and Space Administration (NASA) in association with the Associated Landscape Contractors of America (ALCA) started the NASA Clean Air Study during 1980s. This study advocated that some common indoor plants provide a natural way of removing contaminants such as benzene, formaldehyde and trichloroethylene from the air, which help in prevention from various diseases (NASA, 2014).

As a part of the study, NASA compiled the first list of air-filtering plants. These plants also remove significant amounts of benzene, formaldehyde and trichloroethylene. The second and third lists are from B. C. Wolverton's book and paper which focuses on removal of specific chemicals.

NASA researchers suggested that pure air can be attained with at least one plant per 100 square feet of home or office space. Other more recent research has shown that micro-organisms in the soil of a potted plant remove benzene from the air, and that some plant species also help in removing benzene (NASA, 2014).

The good thing is that these plants are easily found and we can add them to our home to provide ourselves and our family with air that is more pure and free from harmful agents.

### ***Air-filtering plants-***

Aloe Vera: It is great to keep at home since it absorbs the carbon dioxide, formaldehyde and carbon monoxide. Nine air purifiers can apparently be replaced by one aloe vera plant. It is easy to grow and easily available in the market. It also

helpful in keeping the home free from benzene which is commonly found in paint and certain chemical cleaners (Indianexpress, 2016).

**Ficuselastica:** This plant doesn't need a lot of light and cansustainwell in minimum light. It acts against the air of formaldehyde and purify it. Its leaves are poisonous.

**English Ivy:** The English Ivy plant is highly beneficial for those who have pets in the home as it can reduce the amount of airborne fecal matter. It can also absorb formaldehyde which is commonly found in some household cleaning products and furniture or carpeting treatments. It is said that within six hours it will remove 58 per cent of the feces particles and 60 per cent of the toxins in the air. Studies show that keeping an English Ivy plant on the desk will help to focus better because it can also absorb trace amounts of benzene which is a chemical commonly found in office equipment(Paul, 2017).

**Spider plant:** The spider plant is a commonly found houseplant and it is really easy to grow. Within just two days, this plant can remove up to 90 percent of the toxins in indoor air. This plant is particularly known for performing photosynthesis under minimal light. It is great in absorbing toxins such as formaldehyde, carbon monoxide, gasoline and styrene from the air. The leaves grow quickly and help to absorb harmful substances like mold and other allergens so it is the perfect plant for those who have common dust allergies. It also helps to absorb small traces of formaldehyde and carbon monoxide (Beaty, 2014). One plant is apparently enough to clean the air in a 200 sq. m space (Indianexpress,2016).

**Snake plant:** Like the spider plant, a snake plant is also durable and can also do photosynthesis under minimal light, making it aperfect indoor plant. It's a great option for a bedroom as it produces oxygen during the night (Indianexpress,2016). It works well for the asthma patients.

**Peace lilies:** The Peace Lily is a beautiful plant and it can increaseindoor air quality by as much as 60 percent. It removes pollutants such as formaldehyde and trichloroethylene from the air. According to a NASA report, keeping 15-18 of these in a 500 sq. m area is sufficient to purify the air. It helps to reduce the levels of mold spores that grow in the home by absorbing those spores through its leaves and then circulating them to the plant's roots where they are used as food (Paul, 2017). In bathrooms, the Peace Lily can help to keep shower tiles and curtains free from fungus and the plant can absorb harmful vapors from alcohol and acetone.This can also be kept in the bedroom, and it looks appealing too.

**Chinese Evergreen:** The Chinese Evergreen is very easy to maintain and removes a number of air pollutants. It produces minute red berries that are lovely to look at

and can help to remove pollutants from the air that are commonly found in chemical based household cleaners. The longer we have the plant, the more pollutants it will remove. So Chinese Evergreens should be kept for many years for optimum benefits (Paul, 2017).

### ***How to care for plants:***

One must choose 10 to 12 inch potted plant per 100 square foot of home for the most effective air purification. Usage of filtered water or rainwater for the plants. All plants prefer pure water over tap. One must consider where to place the plants and the amount of sun they need and therefore ensure that the plant will thrive in that area. From time to time clean the leaves of each plant with a moist cloth to ensure proper absorption of air particles and toxins. Keep the soil replenished with rich compost or manure. Avoid non-organic or synthetic fertilizers. (Garbadi, 2017)

### ***Discussion***

Plants are extremely important to human life. They convert the carbon dioxide we exhale into fresh oxygen, and they also have the capacity to remove toxins from the air we breathe.

The famous NASA experiment, published in 1989, found that indoor plants can purify the air of volatile organic compounds like formaldehyde, trichloroethylene and benzene. Later research has revealed that soil microorganisms in potted plants also play a part in cleaning indoor air.

Based on this research, some scientists propagate that house plants are effective natural air purifiers. And the bigger and leafier the plant, the better it is at purifying the air. Bill Wolverton, a former NASA research scientist who conducted the 1989 plant study says that leaf surface area influences the rate of air purification in plants. He usually recommends at least two “good sized” plants per 100 square feet of indoor space (HEID, 2018).

Studies have shown plants can reduce stress by calming the sympathetic nervous system, and can also lift up the mood and make people feel happier. More research shows spending time with and around nature has a positive effect on a person's mood and energy levels.

### **There is other side to the debate.**

“There are no definitive studies to show that having indoor plants can significantly increase the air quality in the home to improve health in a measurable way,” says Luz Claudio, a professor of environmental medicine and public health at the Icahn School of Medicine at Mount Sinai (Heid, 2018).

Claudio has reviewed the research on the air-quality benefits of indoor plants.

She says there's no question that plants are capable of removing volatile chemical toxins from the air "under laboratory conditions." But in the real world, in the home, the notion that having a few plants can purify the air doesn't have much hard science to back it up.

Stanley Kays, a professor emeritus of horticulture at the University of Georgia, coauthored a 2009 study on the air-cleaning powers of 28 different indoor plants. While many of those plants could remove toxins from the air but moving from a sealed container to a more open environment changes the dynamics tremendously. "It is not yet possible to project the true potential of plants for purifying indoor air," Kays says. "At this time the role of plants, though appearing [generally] positive, is not totally clear. (Claudio, 2011).

### **Conclusion**

Clean air is the chief requirement to sustain a healthy life of humans and those of the supporting ecosystems which in return affect the human wellbeing. Studies done so far in India are enough to prove that indoor air pollution is a cause of increasing morbidities and mortalities, and there is a need for an urgent intervention. There are social, cultural, and financial factors that influence the decision of people about energy and cooking. Children, the elderly, and women are most vulnerable to potential indoor air pollution health effects because they spend more time in the home environment. Exposure to indoor air pollutants can lead to severe health effects ranging from sneezing and coughing to production of chronic respiratory disorders such as asthma and outcomes such as cardiovascular disease and even cancer.

Air purifiers have proved to be effective but they have their own disadvantages. Some air purifiers emit ozone. Exposure to Ozone gas is harmful to cells in the lungs and airways. Also the availability and affordability is a matter of concern for most people.

Indoor potted plants like aloe vera, peace lilies, snake plant, spider plant, eucalyptus etc act as air purifiers. These plants are easily available and pocket friendly. Studies have shown that these plants not only absorb carbon dioxide and release oxygen, as all plants do, but also eliminate significant amounts of benzene, formaldehyde and trichloroethylene. Some people doubt the ability of these plants to eliminate pollution. They say that the studies have been performed under unreal situations which are not applicable in real world. But NASA's study confirms that there are plants that help in purifying air. Also some researches show that spending time around nature has a positive effect on a person's mood and energy levels, they become happier. Getting such plants at home, in long term can improve our health



conditions.

### ***Future directions***

Debate on Air purifying plants still goes on. Furthermore researches are needed to discover more indoor plants that can purify air inside our homes and evaluate how we can maximize the purification of air with certain plants and which plants can reduce pollution of outside environment too. Research on these issues should go on. Planting those plants and trees around us that eliminate pollution to some extent can help us live a healthier life. It's an environment friendly way to eliminate indoor air pollution. In long term, it will definitely help in reduction of air pollution.

### ***References***

1. BC Wolverton; WL Douglas; K Bounds (July 1989). A study of interior landscape plants for indoor air pollution abatement (Report). NASA. NASA-TM-108061.
2. Orwell, R.; Wood, R.; Tarran, J.; Torpy, F.; Burchett, M. (2004). "Removal of Benzene by the Indoor Plant/Substrate Microcosm and Implications for Air Quality". *Water, Air, & Soil Pollution*. 157 (1–4): 193–207. doi:10.1023/B:WATE.0000038896.55713.5b.
3. Indoor air pollution in developing countries: a major environmental and public health challenge. N. Bruce, R. Perez-Padilla, and R. Albalak <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC2560841/>
4. Enhancing indoor air quality –The air filter advantage Vannan Kandi Vijayan, Haralappa Paramesh, Sundeep Santosh Salvi, and Alpa Anil Kumar Dalal
5. Household Air Pollution and Health, Fact Sheet No. 292. World Health Organization. <http://www.who.int/mediacentre/factsheets/fs292/en/>
6. WHO Guidelines for indoor air quality: Selected pollutants. [http://www.euro.who.int/\\_\\_data/assets/pdf\\_file/0009/128169/e94535.pdf](http://www.euro.who.int/__data/assets/pdf_file/0009/128169/e94535.pdf) .
7. The Indian Express- Article- "Clearing the air: air purifiers may have benefits, but cutting pollution holds key" by Pritha Chatterjee.
8. Indoor Air Pollution in India: Implications on Health and its Control (2014) Ankita Kankaria, Baridalyne Nongkynrih, and Sanjeev Kumar Gupta <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC4215499/>
9. Planting Healthier Indoor Air - Luz Claudio <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3230460/>
10. [indianexpress.com/article/lifestyle/life-style/house-plants-that-purify-air-3740430/](http://indianexpress.com/article/lifestyle/life-style/house-plants-that-purify-air-3740430/)

11. [www.teriin.org/projects/teddy/pdf/air-pollution-health-discussion-paper.pdf](http://www.teriin.org/projects/teddy/pdf/air-pollution-health-discussion-paper.pdf)
12. [edugreen.teri.res.in/explore/air/indoor.htm](http://edugreen.teri.res.in/explore/air/indoor.htm)
13. [www.hunker.com](http://www.hunker.com) –The disadvantages of air purifiers- Eric Devaney
14. [www.diyncrafts.com/4457/home/top-10-nasa-approved-houseplants-improving-indoor-air-quality](http://www.diyncrafts.com/4457/home/top-10-nasa-approved-houseplants-improving-indoor-air-quality)
15. Indoor air pollution and self-reported diseases -A case study of NCT of Delhi. Firdaus G, Ahmad A. Indoor Air. 2011;21:410–6. [PubMed]
16. Can indoor plants really purify the air? By Markham Heid<http://time.com/5105027/indoor-plants-air-quality/>
17. Clearing the air:A review of the effects of particulate matter air pollution on human health. Anderson JO, Thundiyil JG, Stolbach A. J Med Toxicol. 2012;8:166–75. [PMC free article] [PubMed]
18. CISION PR Newswire-India Air Purifiers Market By Filter Type by End User, by Region, by Leading City, Competition Forecast & Opportunities, 2012 – 2022
19. NASA: Clean Air study, 2014
20. Houseplants that can Improve Indoor Air Qualityby Lauren Paul, 2017
21. Eluxe magazine- ALOE, ALOE! 10 GREAT AIR PURIFYING PLANTS By Chiara SpagnoliGabardi

# NEW APPROACHES IN EDUCATION TO DEAL WITH SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Dr. Ramakanti  
Asst. Prof., B.Ed.  
Km. Mayawati Govt. Girls PG College  
Badalpur, Gautam Budh Nagar, UP

## ***Abstract***

Humanity is part of a vast evolving universe. Earth our home, is alive with a unique community of life. But the dominant pattern of production and consumption are causing the depletion of resources and conflict in ownership. Now we are living in the era of civilization crisis and to overcome to this we have to change our approach of education and should define clearly what we have to learn to make our earth sustainable and to produce a just society. Aren't we building a science and a culture that are oriented towards the degradation of the planet and of humankind?. Now this is the time the concept of sustainable development should be linked to that of Planetarity, which means, viewing the earth as a new paradigm. This approach will lead us to a planetary citizenship, a planetary civilization, a planetary awareness. We must understand that the culture of sustainability is also a planetary culture, which means a culture that departs from the principle that the earth is constituted by one single community of human beings, the earthlings, who are citizens of one single nation. This paper tries to present the issues and ideas related to save our planet Earth and Human being as well

## **Keyword**

**Sustainable Development, Planetary Civilization, Planetary citizenship**

## **Introduction**

The issues related with Sustainable Development will dominate in educational debates in the forthcoming decades. What are we studying in schools? Aren't we building a science and a culture that are oriented towards the degradation of the planet and of humankind? Now this is the time the concept of sustainable development should be linked to that of Planetarity, which means, viewing the earth as a new paradigm. This approach will lead us to a planetary citizenship, a planetary civilization, a planetary awareness. We must understand that the culture of sustainability is also a planetary culture, which means a culture that departs from the principle that the earth is constituted by one single community of human beings, the earthlings, who are citizens of one single nation.

Humanity is part of a vast evolving universe. Earth our home, is alive with a

unique community of life. But the dominant pattern of production and consumption are causing the depletion of resources and conflict in ownership. Now we are living in the era of civilization crisis and to overcome to this we have to change our approach of education and should define clearly what we have to learn to make our earth sustainable and to produce a just society. After taking seriously the issues, related to man and this planet, the Earth Charter is prepared in year 2000 at Hague after the discussion by several physical scientist and social scientist under the headship of Earth Charter Commission, which is an independent international entity to work on planet Earth's well-being. The Earth Charter's principles are following;

1. Respect and care for the community of life
2. Ecological Integrity
3. Social and Economic Justice
4. Democracy, Non-Violence and Peace

In coordination with UNESCO, Earth Charter's Principals has prepared the basis for the creation of a global educational system unique and universal, and set a common humanistic foundation for all national systems of education. This is not about creating a system that has a unique ideology, which would be a totalitarian initiative. It would highlight what we have in common. We must note that if we don't find anything in common, war is our only future. It is well known to all that environmental degradation generates human conflicts. The Earth Charter is, in many cases, serving as basis for resolution of conflicts previously generated by an unsustainable way of producing and reproducing our existence in the planet, mainly on a daily basis. As affirmed by Abelardo Brines, professor of the United Nations University for Peace, the principle of global responsibility established in the preamble of the Earth Charter "complements the Human Rights Declaration, recognizing each person as a citizen of the world. Each person is equally responsible for the Earth's community as a whole, even if, individually, we have different roles and responsibilities. We can emphasize on various related issues like the Global Campaign for Education, the Decade of Education for a Sustainable World, Children's Rights Declaration, It is also evident that the values contained in the Declaration of the Millennium are in agreement with the values defended in the Earth Charter: liberty, equality, solidarity, tolerance, respect towards nature, shared responsibility,

For us, sustainability is the dream of living well; sustainability is a dynamic balance with others and the environment, it is the harmony among differences. Leonardo Boff, member of the Earth Charter Commission, emphasised on the Earth Charter role in a holistic and integrated view of humanity's social and environmen-

tal problems. He said that human being is a sub-chapter of the chapter of life and thus human beings must take care of the community of life as a whole. Renowned philosopher, Paulo Freire has said in his last book, "it is urgent that we take upon ourselves the duty of fighting for fundamental ethic principles, such as respect for the life of human beings, the life of other animals, of birds, rivers and forests. I do not believe in lovingness between men and women, among human beings, if we are not capable of loving the world. On one day we deliver a progressive and revolutionary speech and on just another day we do a life-denying practice. A practice that pollutes the sea, the water, fields and that devastates forests, destroys trees, threatens animals and birds" (Freire: 2000:66-67).

Now we have to practice on Eco-pedagogy which is a pedagogy focused on life, it takes into account people, cultures, lifestyles and the respect towards identity and diversity. It acknowledges human beings as creatures that are always in movement, as "incomplete and unfinished" beings, which are constantly shaping itself, learning, interacting with others and with the world. The current dominant pedagogy is cantered in tradition, in what is static, in what generates humiliation for the learner due to the way he/she is evaluated. In Eco-pedagogy, the educator should welcome the student. Sheltering, caring are the basis for education for sustainability, which is being promoted since 2002 by the United Nations through the creation of a "Decade" entirely dedicated to it.

The role of United Nations in Education for a Sustainable Development:

In 2006, UNESCO has created a Reference Group in order to give conceptual and strategical support to the Decade's Secretariat. UNESCO's Secretariat for the Decade, based on studies and researches on education for sustainable development, had produced the educational materials and offered necessary training in order to facilitate the educational reforms.

According to Gerhard de Haan, professor of Future Studies in Education Science at the Free University of Berlin and Chairman of the German National Committee for the UN Decade of Education for Sustainable Development, the concept of sustainable development is about the ability to apply knowledge about sustainable development and simultaneously recognize the problems involved in non-sustainable development" (Haan, 2007:7). He divided it into ten parts:

1. to create knowledge in a spirit of openness to the world, integrating new perspectives
2. to think and act in a forward-looking manner
3. to acquire knowledge and act in an interdisciplinary manner

4. to be able to plan and act in cooperation with others
5. to be able to participate in decision-making processes
6. to be able to motivate others to become active
7. to be able to reflect upon one's own principles and those of others
8. to be able to plan and act autonomously
9. to be able to show empathy for and solidarity with the disadvantaged
10. to be able to motivate oneself to become active.

Besides, when talking about competences and indicators, teaching contexts and levels must be respected. Governments that are engaged in including themes related to sustainability need to consider poverty levels, construction of peace, justice and democracy, security, human rights, cultural diversity, social equality and environmental protection, among other issues.

In general UNESCO has two roles to play, related to the Decade:

1. To catalyse, coordinate and support the global processes initiated under the International Implementation Scheme, particularly in supporting the re-orientation of national educational systems” and
2. To facilitate an enabling environment for the achievement of the objectives and goals

### **Countries taken Step Forward:**

Few European countries, i.e. Scotland's and Hungary's sets example. The Hungarian Network of Eco-Schools are schools whose pedagogical project is based on values of sustainability, environmental education, education for a healthier lifestyle and education for democratic participation. Around 272 schools, approximately 6% of the total number of schools in the country, are already taking part in the network. In order to be part of the network, schools have to demonstrate how they monitor and evaluate their plans of action for education for sustainable development.

The Asia-Pacific region has developed a regional strategy and given importance to the participation of other factors related to Education for Sustainable Development's like social activists, governments, communities, private sector, formal-education institutions, civil society, means of social communication, youngsters and international agencies. Similarly, Latin America has established its regional for Education for Sustainable Development, (in 2007). Latin America has a long tradition in environmental education movements.

Apart from the above-mentioned regions, many other countries already have

their own national plans or strategies for education for sustainable development, such as Finland, Japan, Scotland, Sweden and Germany. India is also taking an important step toward this helping and securing safe environment for everybody. Finland has strongly involved adult education. Among the principles that guide their Decade's strategic plan, are: transparency, interdisciplinarity, cooperation and construction of networks, participation and research. Japan was one of the first countries to create its own plan, in the beginning of 2006, in a meeting between the Ministry of Education and the Ministry of Environment. "Japan's DESD Plan of Action" attaches the ESD to the Goals of the Millennium and establishes many programmes in order to promote quality education according to the principles of sustainability, especially in teacher training. Among the diversity of issues involving the environment, economy, and society, what advanced countries including Japan are now required to do is to incorporate environmental considerations in their socioeconomic systems." (Japan, 2006:4-5).

In India, the Ahmedabad Centre for Environmental Education, created in 1984 and member of the Nehru Foundation for Development, has been experiencing good achievements in terms of promoting the Decade of Education for Sustainable Development with its training programme all over the country.

Precisely speaking, we must change our lifestyles and industrial structure based on mass production, consumption and waste, and establish sustainable consumption and production systems that ensure biodiversity. We have to produce committed teachers at all levels, schools and university heads, students, education ministers and other education politicians all around the world, just to take serious matters seriously, to work with others to change all levels of our education systems.

### **Concept of Sustainable Development:**

The most simple definition of sustainable development can be: "sustainable development is a transformation process in which the use of natural resources, the direction given to investments, the orientation given to technological development and institutional change get in harmony with each other and reinforce the present and future potential, in order to fulfil human needs and aspirations". As we can see, it is a very wide concept.

There are several ways to understand the concept of sustainable development

1. A political system that secures effective citizen participation in decision making;
2. An economic system that is able to generate surpluses and technical knowledge on a self-reliant and sustained basis;

3. A social system that provides for solutions for the tensions arising from disharmonious development;
4. A production system that respects the obligation to preserve the ecological base for development;
5. A technological system that can search continuously for new solutions.
6. An international system that fosters sustainable standards of trade and finance, and
7. An administrative system that is flexible and has the capacity for self-correction.

The concept of “sustainable development” was definitely established during 1992 Earth Summit, in the United Nations Conference on Environment and Development, whose main result was the Agenda 21, which contained a set of proposals and objectives in order to reverse the process of environmental deterioration. Five years later (1997), a Protocol signed by 84 countries (except the United States) in Kyoto, Japan, aimed at the reduction of greenhouse gas emissions. As it is known, the greenhouse effect is provoked by the excess of gases in the atmosphere. Carbon dioxide is one of these gases. When solar radiation reaches the earth, part of the wavelengths is absorbed by the Earth's surface and part is sent back to space. A very high amount of gases in the atmosphere, such as carbon dioxide and methane, makes the Earth absorb a higher quantity of sunlight, causing the planet's “overwarming”. Global warming was not a distant fact anymore. Its effects can be seen in the whole planet. Now we do not have a choice to take action rather we have to change our way to produce and reproduce our existence, otherwise we die. The ultimate cause of global warming is human action, so we have to bring change in our actions.

Despite all the discussion that is being done, the expressions “sustainable” and “development” are still vague and controversial. That is why we need to qualify both of them. We have been trying to give to these concepts a new meaning. It is a fact that the word “sustainable”, when associated to development, is worn out. While for some people it is only a label, for others it became the expression of a logical absurd: development and sustainability would be logically incompatible. To us, “sustainable” is more than a qualifier of economic development. It goes beyond the preservation of natural resources and feasibility of a development without harming the environment. It involves human beings finding a balance between themselves and the planet, and more, with the universe itself. The sustainability we defend refers itself to the discussion of who we are, where we came from and where we are going to, as human beings



So when we talk about sustainable life we understand it as a lifestyle that promotes well-being and well-living for everyone, in harmony (dynamic balance) with the environment: a fair, productive and sustainable lifestyle. Amartya Sen (2000), in his book *Development with freedom*, conceives the progress of humanity as a process of expansion of peoples' freedom, keeping away from the concept of a single way of producing and reproducing the existence, which is linked to industrialization and economic growth. The essential is to guarantee people's freedom to build their lives and their well-being the way they want. What governments should do is offer opportunities so that everyone is able develop their talents, by guaranteeing economic, individual, cultural, social and political rights. Freedoms are interlinked planetarily nowadays. That is why democracy also needs to be planetary and radical.

What we should learn for a sustainable development?

The feeling of being part of the universe does not begin at an adult age, nor arises from logical thinking. From childhood we feel deeply linked to the universe and we face it with a mixed feeling of respect and astonishment. And during our whole lives we look for answers to who we are, where do we come from, where are we going, in short, what is the meaning of our existence. This is an unceasing and endless search.

Education may play a very important role in this process, if it promotes the discussion of many fundamental philosophical issues, but if it also knows how to work well with our knowledge, this capacity we all have to be fascinated with our universe. Nowadays, we have become aware that the meaning of our lives is not at all separated from the meaning of the planet itself and we have to develop a new healthy relationship with the planet, recognizing that we are part of a natural world, living in harmony with the universe, which is characterized by the current ecological concerns. We are confronted with a choice. This shall define the future we will have.

It is supposed that fast growing of Technology is harming Human being and planet as well. But we should consider that technology and humanism seems orientated in parallel, and not opposed to one another. It was through the technology that human being was able to go to the moon and see the Earth. Technology and humanism are not opposed to each other. But, of course, there were excesses in our polluting and consumption-oriented lifestyles, impelled by technology and by an unsustainable economical paradigm. This is what is needed to be discussed. This is one of the roles played by a sustainable or ecological education. The preservation of the environment depends of an ecological awareness, which depends on education. And here is the contribution that can be given by the Earth Pedagogy, the Eco pedagogy. Is

a pedagogy that intends to promote learning the sense of things, departing from our daily lives. We need an eco-pedagogy and an eco-training today; we need a Earth Pedagogy, because without this pedagogy, which is necessary for re-educating man/woman. We don't learn to love the Earth only by reading books on the subject, nor books on integral ecology. Our own experience is fundamental. To plant and follow the growth of a tree or a flower, walking in the streets of a city, or venturing into a forest, feeling the birds' singing in sunny mornings, watching how the wind sways the plants, feeling the warm sand of our beaches, gazing at the stars in a dark night. There are many ways of enchantment and emotion before the wonders that nature reserves us. There is, of course, pollution and environmental destruction to remind us that we are able to destroy this wonder, and also to create our ecological awareness and motivate us to act.

### **Education for Sustainable Development within the context of globalization:**

Globalization, impelled by technology, seems to have an increasing power in determining our lives. Decisions concerning what happen to us in our daily routine seem to escape from us, since they are made far away from us. As a phenomenon, as a process, there is no doubt that globalization is irreversible. Its immediate effects are unemployment, the increase of differences between a small amount of people who have too much and a big amount of people who have too little, the loss of power and autonomy by many nations.

The notion of global citizenship is founded in a unifying view of the planet and of a global society. It reveals itself in many expressions: "our common humanity", "unity in diversity", "our common future", "our common nation", "planetary citizenship". Planetary citizenship is an expression that was adopted to express a group of principles, values, attitudes and habits that show a new perception of the Earth as a single community.

Globalization itself is not a problem. It represents a process of advance never seen before in human history. In the same way there is not only one possible market, there is not one possible globalization. What we see nowadays is a globalization under a capitalist perspective. But there are other possibilities. The problem is a competitive globalization in which the interests of the market are more important than human interests, and people's interests less important than corporative interests of big transnational companies. Therefore, when are able to distinguish a competitive globalization from a possible co-operative and solidary globalization, which we also call a process of "Planarization". The first one follows laws of market, while the second one follows ethic values and human spirituality.

## Conclusion:

Education for a sustainable world needs a review of our curricula, a reorientation of our view of the world and education as a space for the inclusion of an individual in a society that is local and global at the same time. A culture of sustainability presumes a pedagogy of sustainability that is able to cope with the big task of preparing for planetary citizenship. It is the time to reframe our education that aims at making us feel not only members of the Earth, but living a cosmic citizenship. The challenges are huge for educators and for the people responsible for educational systems. Eco-Pedagogy will provide the ability to understand the needs of earth planet and simultaneously will be able to save its environment. Again there are some signs in society that indicate an increasingly search for spiritual themes and for a deeper scientific knowledge of the universe.

So, educating would not be as said by Émile Durkheim, the transmission of a culture “from one generation to another”, but a big trip of each individual to his/her inner universe and to the universe by which he/she is surrounded.

## References:

1. BUSCH, Anne, 2007. Education for Sustainable Development in the EU-Education Programmes
2. Today, Journal of the German Commission for UNESCO, Bonn, 2007, pp. 41-46.
3. DE MOORE, Emily A. Seeds of the Future: The Garden as Primary Educator for Ecological Sustainability
4. HAAN, Gerhard de, 2007. “Education for Sustainable Development: a new field of learning and action”.
5. WALSH, Arjen E. J. (ed.), 2007. Social learning: towards a sustainable world. Wageningen: Wageningen Academic.
6. WCED, 1987. The World Commission on Environment and Development: Our common future. Oxford: Oxford University.
7. SEN, Amartya, 2000. Development with freedom.
8. McKEOWN, R. 2002. Education for Sustainable Development. MEADOWS, D. H. et al. 1992. Beyond the limits: confronting global collapse, envisioning a sustainable future.
9. MIGUEL, Sylvia, 2007. The future of climate in Latin America.

# GLOBALIZATION AND ITS IMPACT ON INDIAN MUSIC

Dr. Bhagat Singh  
Asst Prof., Music  
M.K.R.Govt Degree College  
Ghaziabad

## ***Abstract***

Throughout the world music has been a part of our society and culture. A melodious sound and rhythm attracts everyone. Music is a universal language and a tool for many things as relaxation, stimulation and communication. The development of technology and use of ICT tools has affected the quality of music in modern times. In some ways it is positively apparent that gives a better medium for learning but on the other side it seems that it is losing the quality and standard. In the global village it is very easy to hear the world music. The purity of tradition is disappeared and the mixing in music has been become popular. It should be noted that Indian music is based on the purity of melody that is called Ragdari Sangeet. In modern time tunes are being mixed with the help of computer and it becomes technical only not an art that comes from heart and soul.

Globalization is becoming a main point of discussion today's world. People argue over the loss of a nation's cultural identity, the fear of westernization, and the reign of cultural imperialism. Some people think that it is not good for our Indian Classical Music because new generation is taking interest in fast music. The use of electronic devices and musical software has increased. Students have no patience for practice more and more. They use short cut way for learning the music. Our traditional music is full of devotion and melodies and its power of music therapy is famous in the world. We should use ICT tools to help in the learning of music for students but the traditional method of Guru - Shishya should not be unseen.

Globalization is important for the development of music under the tradition. We know that cultural imperialism, globalization and the creation of a global village is a business. People sell a culture, music and heritage. For the integrity of the nation and the development of Indian music we should follow our traditional methods with the help of new technologies.

## **Keywords**

**Globalization, Culture, Music, Quality Technology**

## **Introduction**

The term "Globalization" has been much popular in the society for last many years. It comes from English, as the base of the word "global" which refers to the

emerging of an international network, belonging to an economic and social system. The meaning of the word 'Globalization' is the increasing interaction of people, states, or countries through the growth of the international flow of money, ideas, and culture. The root of globalization, we find in Indian philosophy. According to Indian concept the whole world is imagined as a family. In the Sanskrit book Mahopanishadwe have-

Ayam bandhurayam neti ganna laghuchetsam?

Udarcharitanam tu Vasudhaiva Kutumbakam ??(i)

It is mine or it is others, only narrow-minded persons think such but the whole world is a family for the broad-minded person. Vasudha means earth in Sanskrit and kutumbakam means the family. The idea of Vasudhaiva Kutumbakam is hidden in the concept of 'vishwatma' Vedic philosophy. This concept hasgiven the great contribution to world peace. The idea of kutumbakam in Indian philosophy has affected every aspect of human life, social, political, religious, economic, literature, and arts etc. This feeling was internally so it attracted world's largest renowned philosophers and scholars. In modern world the world is turning into a global village. This changing is due to development of technology and modern science. Due to the abundance of resources, it has become easier to reach far and away places on the earth. Information technologies have given all sorts of individual economic growth and understanding other cultures. Smartphone has a great role in this field. By one click we reach to desired music and tradition of society. The discovery of electronic, internet, computer, etc. has made the world a family. The concept of "Vasudhaiva Kutumbakam " is seen to be real.

Globalization has affected every field of life. Like other arts, it has affected Indian music. Indian Music is also dynamic, alive, and ever-changing. In the field of music, it has affected many styles of singing, dancing, and instrumental performances. With newer experiments, the music continues to grow and thus it is promoted. Like the water of the river, it flows continuously. It is very amazing that the folk tunes of different regions seem to be similar to each other. The reason behind this is that folk tunes are spread by folk artists in the open air. Folk songs are preserved by villagers in unchanging form. Indian Music is based on melody. Rag concept is unique in our music. Andthe music cannot live limited to any boundary. It has been a close part of culture and society. The music of India evolved on its soil and imbibed the spirit of India. Indirectly the social media, mobility, and progress of technology affect culture and music of any country. The medium of music is sound. The sound is a great and powerful medium of conversation. Musical sound is different than speech. It is a carrier of feelings. In musical performance the whole body involves. It carries a man beyond the world. It is called a universal language. Whether we do not know the language of any country, but through the music of that

country we can understand the feeling. We are impressed by the musical tunes only without knowing language. Music has a unbreakable relationship with humanity. Music has a close relationship with society and culture.

Innovation is essential for art survival. Indian music has assumed several dimensions and forms. It has been a great tendency in Indian culture to accept good things from out sides. We have assimilated many values of other cultures. Indian culture has been flexible in nature.

### **Globalization and classical music**

Indian ragdari system is unique in the world. It is intended to individual expression of a musician through a particular musical phrase. A particular rag represents a special mood. Through many micro tones and notes a musician is successful to build a musical environment among listeners. From beginning to the present Indian classical music has gone through various phrases of transformations. The origin of classical music is in Samved. From origin it has been a medium of worship and devotion to God. So purity was main thing for this. Many centuries ago it accepted and rejected many features for development. In each age it has accepted and excluded many things with the need of society. In Vedic period it was called Geeti, Gatha, in Pauranik period it was called as Margi and in modern times it is popular as Khyal Gayaki. The main concept of Raga is present in classical music by now.

After many transitions it has a smell of old traditions. However it has an effect of world globalization but it is deeply linked to its ragdari system. The unique thing in Indian music is accepting modernity being in ragdari boundary. The smell of rag should be continued. It cannot be changed in whole performance. Many changes have been accepted in music but the inner soul of Raga is continued. Globalization in Indian music is a tool to share styles of singing, compositions and musical instruments.

### **Impact of ICT tools on Globalization**

In recent years the use of ICT tools in music has affected much. Before many years ago it was very hard and costly for learning music. In modern days people can share regional music with what Sapp and by other many apps. Internet has a great role in this field. We can listen and send music all across the world. It is an easy medium for popularize the music. Music lovers are familiar with many art forms on one click. For example a person sitting in Indian village can listen American music on you tube through internet on smartphone. We can listen many artists on YouTube easily and then we can analysis their styles of singing. The Gharana System is now changing in Indian music because students of music can listen easily singing of any Gharana. Modern student of music accepts the idea and quality of any Gharana (school).

There have been many changes via Ragas, use of rhythm, performance style etc. Many factors such as industrialization, commercialization, technological advancement and the mass media affect this. Marketing has become a main issue. It has affected music much. Due to various inventions of technology, there have been many changes in human life. In our everyday lifestyle, telephone, cellphone, television, cable TV. Internet, computer etc. have made qualitative changes. "Music" is an important part of human life and it cannot remain untouched by these changes. There are numerous changes in today's Indian music than the 60-70-year-old music. The use of musical instruments, the dimension of music education, the audience's changes are seen in all the ways of making voice.

In the 13th century there were many changes in Indian classical music. At this time many invaders came to India thus Indian culture exchanged. As a result, Music also was affected. The foreigners brought their music with them which influenced the Indian classical music. Like Indian culture, our music has been acceptable and generous. Many good things we accepted in our music. Our music gracefully intermingled with Persian music. In the 13th century, the Persian music had 12 notes. "As a result of the Persian influence, the Indian scholars of music sought to define the scope or the extent of Indian classical music by bringing about a linkage between the shastra and prayog or the theoretical and practical aspects".[ii]

Till 14th-century dhrupad style of singing was very popular in courts and in temples. Dhrupad style had a pure traditional base of singing. Before some decades dhrupad had four parts as sthai, antara, sanchari and aabhog. In modern time it has only two parts named sthai and antara. Gradually its popularity decreased and khyal gayaki became popular in society. In ancient period the musical compositions had been long because audience had much time for listening and there were fewer resources for amusements. Now there are many sources for amusement and people have a less time so the compositions are being short. In classical music the traditional performance of bada khyal singing is being disappeared gradually. In modern time, Famous classical artists prefer chhota khyal singing. The qawwali singing had an influence on khyal singing also.

The effects of globalization are not all positive. In some ways it is negative. Marketing of music is limited to earning money. The quality of music has been down. Students of music have forgotten Riyaz. They rush for early popularity. The quality of pure music is going down in this way. A good music has a good effect on our body and mind like food. Music has become a product only not a medium for purifying the mind and soul. It is not intended for the quality of music. It is based on quantity. Marketing has become a vital mechanism through which the quality of music is judged. In past days music was a medium of devotion to God and the purifying of

heart. The standard of folk music was highly regarded. In present time folk tunes are mixed with western instruments. The natural voice and traditional instruments are missing in folk songs. It has a bad effect on music.

### **Positive effects of globalization**

- It helps an artist to become familiar in public.
  - An artist is not restricted by any rule for downloading or listening to the music of another region.
  - A musician can find success in another country when he is not successful in his country.
  - It is a boon for a musical student learning the music with the help of musical videos.
  - Undermining the values of the rich tradition of music
  - Each can study theory and history of music online.
  - musician can create his own music by accepting the merits of the music of other states and countries.
  - schools in music are coming nearer and the negative effects of Globalization
- 
- The dominance of the western music on Indian music.
  - The loss of self-identity.
  - music is becoming full of noise and less of sweetness.
  - Elements of age-old tradition are being disappeared among youths.
  - It is totally concerned with marketing.
  - DJ music is popularizing in a new generation which is full of sound pollution.
  - students are following YouTube as a guru. It has been increasing
  - lack of devotion to the guru in modern students.

### **Conclusion**

Indian arts are intended to 'rih'm'(od). The object of music has been also to attain inner peace and harmony with the world. The concept of 'ishis' is to live with simplicity and lovingly to creatures. This element reflects our culture and heritage. Music is also full of devotion. A man who is broadminded has a power to accept change. While incorporating many changes in self, Indian music is moving towards continuous development. Modern technology has contributed a lot in the promotion of Indian music. We can sit in one place and listen to music all over the world. Modern technology has contributed a lot to the promotion of Indian music. It has accepted many qualities of Western music and Arabian music. In this matter north Indian music is very prosperous.



# INFORMATION OVERLOAD AS A MAJOR DETERMINANT OF PSYCHOLOGICAL MALADJUSTMENT

Dr.Sanjiv Kumar

Asst. Prof., B. Ed.

Km. Mayawati Govt. Girls P.G.College

Badalpur, Gautambudh Nagar

## **Abstract**

*The Researcher in his study title "Information Overload as a major determinant of Psychological Maladjustment" has in his first chapter analysed the meaning, definition and historical perspective of information Overload. In the second section of the study the researcher has explained the Major and Primary determinants of information overload. In the third section of the study the psychological impacts of information overload has been discussed. The Fourth section of the study gives the behavioural solutions to control the negative impact of information overload on humans.*

## **Keywords**

**Information Overload, Information Explosion, Infoxication, Stress Disorders, Attention Deficit Hyperactivity Disorder, Memory, Anxiety.**

On the above mentioned title of the study, the researcher has decided to classify his study under below mentioned topics.

1. Meaning, definition and historical perspective of Information Explosion.
2. Major Determinants of Information Explosion.
3. Psychological Impact of Information Explosion
4. Behavioural solutions to control the negative impact of Information Explosion
5. References.

## **Meaning, definition and historical perspective of information Explosion-**

The Online Oxford English Dictionary indicates that the phrase "Information Explosion" was first used in the

"New Statesman" article in March 1964. In another justification some scholars believe that the term was first used in "The New York Times" editorial content by Walter Sullivan in June 7, 1964, in which he described the term as "much discussed."

Information explosion is a term used to explain the continuously multiplying quantity of published information and the impact of this abundance of data. As the quantity of available information grows, managing the information becomes more difficult, which can lead to information overburden or information overload. Infor-

mation overload refers to the state of having too much information to make a decision or remain informed about a topic. The term was first used in 1970 by Alvin Toffler in his book "Future Shock".

In Future Shock published in 1970, a Sociologist and Futurologist Alvin Toffler describes the overwhelming flood of information and labeled it as an "information overload." This change will overwhelm people because the accelerated rate of technological and social change will leave them disconnected and cause "shattering stress and disorientation"—future shocked. Toffler states that the majority of social problems were symptoms of the future shock. In his discussion of the components of such shock, he also coined the term "information overload".

Information overload (also known as infobesity, 1.infoxication, 2.Information explosion 3. is a term used to describe the difficulty of understanding an issue and effectively making decisions when one has too much information about that issue.[5] Generally, the term is associated with the excessive quantity of daily information. Information overload most likely originated from information theory, which are studies in the storage, preservation, communication, compression, and extraction of information.

Information theory studies the quantification, storage, and communication of information. It was originally proposed by Claude E. Shannon in 1948 to find fundamental limits on signal processing and communication operations such as data compression, in a landmark paper entitled "A Mathematical Theory of Communication".

Hence, Information overload is associated with the over-exposure, excessive consumption, and input abundance of information and data.

Major Determinants of information Explosion-

- (A) A rapid increase in the production rate of new information
- (B) The ease of duplication and transmission of data across the Internet
- (C) An increase in the available channels of incoming information.
- (D) Large amounts of historical informations are there.
- (E) Contradictions and inaccuracies in available information
- (F) A low signal-to-noise ratio (informally, the ratio of useful information to false or irrelevant data)
- (G) A lack of a method for comparing and processing different kinds of information

**Psychological impact of Information Explosion-**

1. Overload of information due to Information Explosion can increase the stress level of the individual.

The following changes in personality are common to observe in people who are stressed:

- (A) Irritability
- (B) Hostility
- (C) Frustration
- (D) Anger
- (E) Aggressive feelings and behavior
- (F) Decreased interest in appearance
- (G) Decreased concern with punctuality
- (H) Obsessive/compulsive behavior (trying to cope with unwanted repeated thoughts or obsessions, by engaging in compulsive behavior rituals such as counting, checking, washing, etc.)
- (I) Reduced work efficiency or productivity
- (J) Lying or making excuses to cover up poor work
- (K) Excessively defensiveness or suspiciousness
- (L) Problems in communication
- (M) Social withdrawal and isolation
- (N) Impulsivity (expressed as impulse buying, gambling, sexual behavior, or similar)

Research suggests that chronic stress can lead to or exacerbate mood disorders such as depression and anxiety, bipolar disorder, cognitive (thinking) problems, personality changes, and problem behaviors.

2. Overload of information due to information explosion can break the Mental Focus of the individual.

ADHD (Attention deficit hyperactivity disorder) is a disorder that makes it difficult for people to control their behavior and/or pay attention.

#### *Symptoms of ADHD*

The primary symptoms of ADHD are focusing difficulties, hyperactivity (excessive activity), and impulsivity (acting before considering the consequences).

The three main categories are :

Inattentive: difficulty focusing or staying focused on a task or activity

Hyperactive-impulsive: excessive activity and impulsivity

Combined: focusing problems plus excessive activity and impulsivity

3. The Power of Attention can be disturbed due to overload of informations.
4. As per the studies of Dr. Hemp information overload is deteriorating the focus, attention and intelligence level of the individual.
5. As per the study of Dr. Loder information overload is making desensitized individuals. In addition to this people's begin to struggle with stress, self-esteem, self-worth, physical health issues, fatigue and exhaustion, memory issues and attention problems.
6. As per Dr.Wahnon "The digital age has monopolized our attentions,our emotions,our physical health,our spiritual health and our mental health."
7. Dr.M. Kumar has said that "Neuroscience had proven that multi-tasking is basically an illusion and rationalization that we tell ourselves to enforce how productive we are."
8. As noted in Levitins article regarding information explosion "We are losing our compassion,our humanity,our common courtesies, boundaries,respect and other things that keep us connected."
9. Dr.Schwarz has discussed the chemical changes that technology has on our brains.
10. Dr.Allen Rya has mentioned in his article that "We are underestimating the assault that information overload has on our senses.Continuous overload put us at risks for mental and physical disorders and diseases as stress, anxiety, negative self-talk and self-made escalates.
11. As per Dr. Sanjiv Kumar view point Information overload has a negative correlation with the ability to discriminate and select.
12. Information overload is minimising the ability to adjust with the environment.
13. Information overload has a negative impact on Span of Attention.
14. As per Dr.Ramakanti "Information overload can disturb the ability of Retention,Recall and Recognition".
15. According to Mohd.Waqar Raza "Information overload can disturb the of Sensory Memory Cycle of the individual."
16. According to "National Institute of Mental Health (U.S)" excess of online information can create Anxiety disorders which can leads to below mentioned

impact on mind-

1. Feeling tense, nervous or unable to relax.
2. Having a sense of dread, or fearing the worst
3. Feeling like the world is speeding up or slowing down
4. Feeling like other people can see you're anxious and are looking at you
5. Feeling like you can't stop worrying, or that bad things will happen if you stop worrying
6. Worrying about anxiety itself, for example worrying about when panic attacks might happen
7. Wanting lots of reassurance from other people or worrying that people are angry or upset with you
8. Worrying that you're losing touch with reality
9. Rumination – thinking a lot about bad experiences, or thinking over a situation again and again
10. Depersonalisation – feeling disconnected from your mind or body, or like you're watching someone else (this is a type of dissociation)
11. Derealisation – feeling disconnected from the world around you, or like the world isn't real (this is a type of dissociation)
12. Worrying a lot about things that might happen in the future.

*Behavioural solutions to control the negative impact of information Explosion.*

We are undoubtedly curious and hungry for information as it is easy to access anytime and anywhere. Whatever idea pops up into our mind, we want details about it and we check as many sources as we can.

But knowing the risks we expose ourselves to, we should opt for strategies & solutions that will ensure a normal function of our brain.

**1. Use Information filtration theory**

Read and listen only to the information you consider useful for today or if it enriches your knowledge. Otherwise, ignore irrelevant information like news, gossips, talk-shows, etc.

**2. Select the the Reliable and Valid Resource**

It is always great to hear different opinions, but more does not mean better or truer. Select only the reliable sources and stick to them.

**3. Restrict yourself**

Is it really necessary to read the news every morning or update your posts daily on Facebook? Set some time limit and do not spend more than 10 minutes a day checking your social media or the gossip you hear about your favorite celebrity.

4. *Set your priorities*

Some activities are more important than the others. Do not overload your schedule with plenty of activities that require your maximum attention. First, finish the most important one and if time allows, do the others.

5. *Choose your conversations*

Some people can leave you emotionally or mentally drained. Some may like to talk too much and give you as many details as possible while others will simply pass their problems to you. Your time and energy are limited, so spend them wisely.

6. *Learn to Refuse.*

If some tasks are out of your league or you feel like drowning in work, do not be afraid to refuse. An extra amount of work will reduce the efficiency and quality of your cognitive performance. This, in turn, will not bring the results you expect.

7. *Do the right thing!*

Year after year, the number of young people who suffer from stroke increases. According to scientists, one of the explanations of this worrying phenomenon is the overstimulation of young people's brains because they have too many responsibilities.

Thus, experts suggest that we should re-energize our neurons and increase their resistance to damage by doing 4 simple things: physical exercise, sleep, hydration and outdoor activities.

8. *Spend some time alone*

What else can refresh your brain better than spending some time alone? Give yourself a break and put your thoughts into order by simply doing nothing, away from the noises, Internet and people.

Are you experiencing the symptoms of information overload? If yes, what methods do you use to find a psychological equilibrium?

**References :-**

1. Charletain,J.L(2009) Eight things you need to know to manage the explosion of information.
2. Elson,S.(1990) Seven Signs of fallout from the information Explosion

3. Etsua-Mensah (1999) Drowning in information and Thirsting for knowledge: The information Professional Dilemma.Ghana Library Journal.Volumes 10 and 11.1-9
4. Hjørland,Burger (2006) Information Explosion.
5. Ifijeh,G.I.(2010) Information Explosion and University Libraries: Current Trends and Strategies for Intervention.
6. Lynch,C.(2005). Where Do We Go From here ? The Next Decade for Digital Libraries.
7. McIroy,T.(2009) The Information Explosion and it's Impact on Future of Publishing.
8. Ogunsola,L.A.(2005) Information and Communication technologies and it's effect on Globalisation:Twenty-one first century Myth or Reality.
9. Wilson,T.(2001) Information Overload Myth, Realty and Implications for Health Care.
10. Farhoomand,A.:Drury,D. (2002): Managerial Information Overload, Communication of the ACM,New York.
11. Dietze ,A.(2003): Information system value management.Gabler Verlag, Vallendar.
12. Zeldes,N.(2007): The impact of information overload.

# AN IMPORTANT ROLE OF MATHEMATICS IN BUSINESS OR COMPANY

Jitender Kumar  
Asst. Prof., Commerce  
M.K.R Govt. Degree College  
Ghaziabad

## ***Abstract***

Every business or a company need to maintain the account with numeric digits and provide the right knowledge of profit and loss of the business .With mathematics rule we understand basic business profitable operations and accurate record keeping. In this study knowing the functions of mathematics how to add, subtract, multiply, divide, round and use percentages and fractions is the minimum you need to price your product and the meet your budget.

## ***Keywords***

**Business, Mathematics Functions, Production Price Analysis**

## ***Introduction***

Mathematics plays a major role in business management because it helps maximize profit by using techniques such as analyzing production costs, determining ideal sales, having strong skills in mathematics mean an individual can analyze all of a company's finances and make changes to save the company money and time. Ultimately make a bigger profit.

The study of mathematics is essentially just studying number patterns, and in business, this means knowing how to manipulate numbers and make meaning out of large data sets, all companies need some sort of mathematician to look at the company's expenses, sales and cash flow. If a company has good documentation of where their money is coming from and going to , using mathematics, an individual is able to see inefficiencies in the company's operations and make important changes. For instance assume that a company is selling a lot of products that has a very low sales price. After someone buys the product help of the money that the company just made is just covering the production costs of the product, and another quarter of the money goes to the labor and shipping costs for products. This means that only one fourth of the sales price goes to profit.A mathematician could look at all of the costs and use simple arithmetic to find out how much the product's sale price could be raised to make more money left for overhead, while still maintaining high enough sales numbers to ultimately increase profit.



### *Objective of the study:*

There are some important objectives of the study following are :

To study the important functions of mathematics in business or company.

To analyze the cost of production, determine price, and measuring profit of a business or a company.

### *Functions of mathematics in business:-*

There are some important functions of mathematics for a successful business because business ownership requires more than skill in creating a product or talent at providing a service. Overseeing the finance of your company is key to survival and success. Understanding basic business math is necessary for profitable operations and accurate record keeping .knowing how to add, subtract, multiply, divide, round and use percentages and fractions is the minimum you need to price your product and meet your budget. So some functions are given below to understand how to success business with math.

1. **Calculate production costs:** - Before you formally settle your business, you need to estimate the cost to manufacture or purchase your product or perform your service. Adding all expenses associated with making or buying items helps you make real if you can be competitive with other companies and profitable enough to support your business and make a reasonable income. Apart from the standard cost of production, like as materials and machinery, add following expenses, such as shipping, labor, interest on debt, storage and marketing. The basis to your business plan is an accurate representation of how much you will spend on each item.
2. **Determine pricing:** - To ensure you can operate your business and produce enough cash flow to invest into your enterprise, you must charge enough for your product to be profitable. Mark up is the difference between your merchandise cost and the selling price, giving you gross profit. If your operations require a large mark up, such as 70% you may not be competitive in your industry if other companies sell the same items for less. Once you have determined your mark up. One way to calculate the retail price is to divide using percents or decimals.
3. **Measure profits :-** If you want to determine the net profit for a certain time period , you will need to subtract returns, costs to produce an item and operating expenses from your total amount of sales, or gross revenue, during that time discount on products, depreciation on equipment and taxes also must be calculated and subtracted from revenue. To arrive at your net profit, and any interest

you earned from credit extended to customers, which is reflected as a percent of the amount each person owes. Your net profit helps you understand if you are charging enough for your product and selling an adequate volume to continue to operate your business or even expand.

4. **Analyze finances:** - To analyze the overall financial health of your business, you will need to project revenue and expenses for the future. It's important to understand the impact to your accounting records when you change a number to reflect an increase or decrease in future sales. You may need to know if you can afford to expand your operations to improve sales using basic business math to understand how these types of actions impact your overall finances is imperative before taking your business to the next level.

*Conclusion:*

In brief we can say all business activity depends only and only on mathematics because in relation to business include the use of it in areas such as calculation of profit & loss, cash inflow & cash outflow, bank account, wages & salary calculation, income tax, calculation cost of product, measuring profit, etc. so mathematics plays a very important role for a business or a company.

*References:-*

- The role of mathematics in business decisions. By Stephen F. Keating (1973)
- The role of mathematics and logic By Kenneth Ewart Boulding (1971)
- Veer, D., Shukla, P., mathematics- "The Queen of commerce", Shodh, Samiksha aur mulyankan.2(6), 2009, 819-820

# ARCHITECTURE INSPIRATION AND OUTFIT DESIGNING: AN INFORMATIVE STUDY

Vedika

Junior Research Fellow

Dr. Surender Kaur

Asso. Prof. Dept. of Home Science

ML & JNK Girls College, Saharanpur

## **Abstract**

*Inspiration, idea and concept are the three primary and initiative part of design in both fashion and architecture. Inspiration is the feeling that one might get from seeing or hearing something and it would bring out new ideas, these things can be from childhood, a dream, and ones memory or even without any background it will help to create new ideas and designs. The inspiration for garment silhouettes and details can be found in almost any architectural source. When the architecture is investigated by the designer an unexpected detail of a building may become one of the magnificent features of the garment design. The present study focuses on the different types of ethnic/western outfits for girls and reveals that outfit designing takes inspiration from architecture.*

## **Key Words**

**Architecture, Ethnic outfit, Western outfit, Outfit designing**

## **Introduction**

The term fashion symbolizes a characteristic means of expression or presentation. Fashion exists in the intricacies of aesthetics with innovation, coupled with pleasing details. Design is something a great deal more intrinsic and a great deal more vital than all of these. Therefore, outfit is only one of the forms in which fashion finds expression. There is a saying that dress design is "life expressed in clothes". "Outfit changes the manners" and clothes should be designed with a careful regard for the occasions on which they are to be worn.

Ethnic outfit may be any kind of dress that is specific to any country like an Indian ethnic outfit would be sari, kurta and salwar kameez. An ethnic group refers to people who share a cultural heritage or historical tradition, usually connected to a geographical location or a language background. On the other hand Western outfit is a category of clothing which derives its unique style from the clothes worn in 19th century American west. These can be casual as well as formal, with a t-shirt, jeans, skirt, top and so on or may consist of tailored garments with western accents.

Architecture can be an inspiration for an outfit designing. It may seem a little

surprising to use an architectural building as an inspiration for outfit design, but all examples of architecture, whether traditional or contemporary, can cause a creative spark to the designer. Whether it is in the overall the meofa building or just a detail, usefulideasinthe architecture can be found as inspiration to create a garment. Both architecture and fashion design have so many important similarities; one of the similarities is that they both are benefiting of the existence of relationship between art, Science and technology. Both forms are three dimensional and contain space; both are structured; both are related to fine arts and visual. Other similarity can be known as the fact that they both provide shelter for human beings.

## **OBJECTIVES**

- To study the types of ethnic and western outfits for girls
- To document the adaptation of architectural designs for different outfits

## **METHODOLOGY**

For the achieving of objectives differenttypes of ethnic and western outfits were studied. To conduct the study purposive method was used according to the demand of research. After that various architectural buildings as a source of design for different outfits were documented. Around 30 studies were screened for compiling this paper to get the information regarding architectural inspiration for outfit designing as it is the main focus of the study.

## **RESULTS AND DISCUSSION**

India is a country where we find maximum numbers of traditions, hence maximum number of outfits are also there. In every region of the country different types of dresses are worn either they are ethnic or western. Sari, an ethnic outfit worn in different styles in different part of India. Though the western influence has changed our mode of dressing, even then our traditional outfits for special occasion are still there.

### **Documentation of architectural designs with outfit designs**

The information was collected and documented through various secondary sources like internet, dissertations, publications and research work in particular field to get an idea and inspiration for designing different ethnic and western outfits for girls from architectural designs. Here presents some collection of dress designs inspired by architecture.

Figure: (a) Tajmahal, Agra (India); (b) Outfit Design inspired by Tajmahal

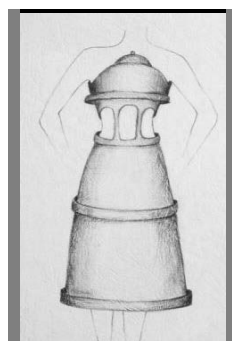
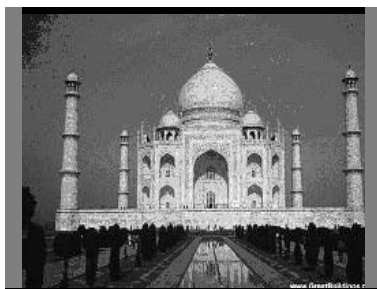


Figure: (c) Opera house, Sydney (Australia); (d) Outfit Design inspired by Opera house

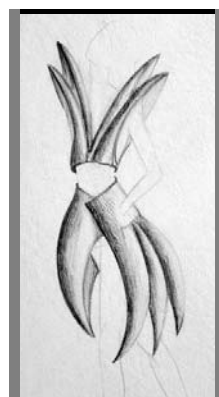
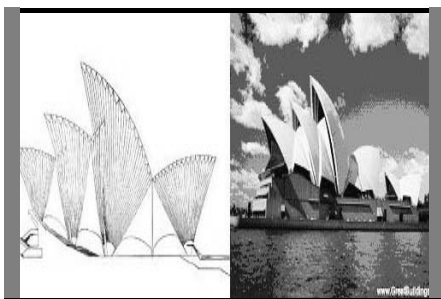


Figure: (e) Interior of Romyantsevo Station, Moscow (Russia); (f) Outfit Design inspired by Romyantsevo Station.



Figure:(g) Mausoleum of Mohammed V, Rabat (Morocco); (h) Outfit Design inspired by mausoleum.

(g)

(h)



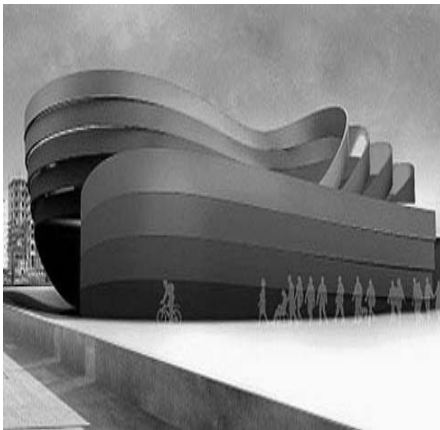
Figure:(i)Iceberg, Aarhus (Denmark); (j) Outfit Design inspired by Iceberg.

(i) (j)



Figure:(k)Museum-Holon (Israel);(l) Outfit Design inspired by museum Holon

(k)



(l)



## CONCLUSION

Designing as the key element in both fashion and architecture brings them closer and create relationships between them. It is one of the other factors which both architecture and fashion have in common. Designs inspired from architecture can discover interesting textures, glamorous colors and strong design features which reflect in dresses.

Many studies mentioned above have already been conducted regarding designing of outfits by taking inspiration from various architectural designs. So it can be concluded from the results of the work that, it is possible to explore the possibility of adaptation of architecture to develop designs for different dresses not only for western dresses but also for ethnic wear to meet the excessive demands of contemporary designs in the fashion and apparel fields and also to increase the variety of designs in the field of textiles.

## REFERENCES

- Davis, J. (2016). A Complete Guide to Fashion Designing. Bharat Bhushan Abhishek publications, Chandigarh. Pp 156
- Hedayat, A. (2012). Inquiry on Interrelationships Between Architecture and Fashion Design. [citeseerx.ist.psu.edu>viewdoc>download](http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download)
- Kaur, N. (2014). Developing one piece Dresses for college going Girls inspired from Architecture. [krishikosh.egranth.ac.in>handle>1](http://krishikosh.egranth.ac.in/handle/1)

- McClaud, P. (2013). Past and Present Trends in Fashion Technology. Bharat Bhushan Abhishek publications, Chandigarh. Pp 65-92
- Özsavas Akçay, A., & Alothman, H. (2018). Fashion Inspired by Architecture: The Interrelationship between Mashrabiya and Fashion World. Journal of History Culture and Art Research, 7(2), 328-351. doi:<http://dx.doi.org/10.7596/taksad.v7i2.1480>
- Paksoy, H. (2004). Architectural inspirations in Fashion Design. <http://www.newmedia.yeditepe.edu.tr/pdfs/isimd..>
- <https://www.encyclopedia.com>. Encyclopedia of Clothing and Fashion COPY-RIGHT 2005 The Gale Group, Inc.



# ECOFEMINISM : ROLE OF WOMEN IN SUSTAINABLE DEVELOPMENT

*Meenakshi Lohani*

*Assi. Prof., Dept. of Geo.,*

*Km. Mayawati Government Girls P.G. College,*

*Badalpur, Gautambuddha Nagar,*

## **Abstract**

Recent studies on women and environment have shown that women are significant actors in natural resource management and they are major contributors to environmental rehabilitation and conservation. In addressing some key environmental problems, women play a dominant role. Women, through their roles as farmers and as collectors of water and firewood, have a close connection with their local environment and often suffer most directly from environmental problems. Women's direct contact with environment has produced them deep- knowledge about the environment. Thus, women have served as agriculturalists, water resource manager, and traditional scientists, among others. Women are not only knowledgeable about the environment, but they are also protective and caring. Women, being primarily responsible for domestic and household management, interact more intensively with the natural environment and build the environment more than men. Consequently, they are more likely to suffer. Over-exploitation of resources like land, water, fuel etc. has resulted in degradation of resources mainly due to industrial pollution, soil erosion, deforestation, urbanization. Therefore, conservation of natural resources and promotion of environment cannot be done without involving the women in planning and training for promoting the values for conservation and promotion of environment. Hence, attempt has been made to assess the role of women in conservation and promotion of environment along with suitable strategy for the same.

## **Keyword**

**Urbanization, Degradation, Enhancement, Conservation.**

## **Introduction**

The term ecofeminism is used to describe a feminist approach to understanding ecology. Ecofeminist thinkers draw on the concept of gender to theorize on the relationship between humans and the natural world. The term was coined by the French writer Françoise d' Eaubonne in her book *Le Féminisme ou la Mort* (1974). Ecofeminist theory asserts that a feminist perspective of ecology does not place women in the dominant position of power, but rather calls for an egalitarian society in which

there is no one dominant group. Today, there are several dimensions of ecofeminism, including liberal ecofeminism, spiritual/cultural ecofeminism, and social/socialist ecofeminism.

Ecofeminism addresses the parallels between the oppression of nature and the oppression of women to emphasize the idea that both must be understood in order to properly recognize how they are connected. These parallels include but are not limited to seeing women and nature as property, seeing men as the curators of culture and women as the curators of nature, and how men dominate women and humans dominate nature.

Governments are now seeing the global dimension of a number of environmental problems, such as climate change, ozone depletion, dumping of hazardous wastes, destruction of biological resources and of forests, and the impact of desertification. Therefore, the need to protect the environment becomes imperative. Women have recorded successes in solving environmental problems all over the world. In India, the women realized that degradation of productive land has led to the erosion of top soil; the choking of water drainage was causing salinity and loss of food crops. They collectively lease degraded land and revived them through traditional farming. They are more concerned about environmental protection and ecological preservation. A lot has been said about women activities in environment improvement and protection. Moser (1991) distinguishes between three roles for women:

- i. As managers or maintainers of the natural environment,
- ii. Rehabilitators of the natural environment in the sense of sustainable development, and
- iii. As innovators in the use of appropriate technology in the creation of new environments. .

Throughout history men have looked at natural resources as commercial entities or income generating tools, while women have tended to see the environment as a resource support their basic needs. As an example, rural Indian women collect the dead branches which are cut by storm for fuel wood to use rather than cutting the live trees. Since African, Asian and Latin American women use the land to produce food for their family; they acquire the knowledge of the land / soil conditions, water, and other environmental features. Any changes in the environment on these areas, like deforestation, have the most effect on women of that area, and cause them to suffer until they can cope with these changes. An example of female predominance in the defense of natural forests comes from India in 1906. As forest clearing was expanding conflict between loggers and government and peasant communities increased. To thwart resistance to the forest cleaning, the men were diverted from their

villages to a fictional payment compensation site and loggers were sending to the forests. The women left in the villages; however, protested by physically hugging themselves to the trees to prevent their being cut down, giving rise to what is now called the Chipko movement, an environmentalist.

### **Chipko Movement**

One of the first environmentalist movements which were inspired by women was the Chipko movement (Women tree-huggers in India). "Its name comes from a Hindi word meaning to stick" (as in glue). Chipko was a forest conservation movement in India. It began in 1973 in Reni village of Chamoli district, Uttarakhand and went on to become a rallying point for many future environmental movements all over the world. The movement was an act of defiance against the state government's permission given to a corporation for commercial logging. Women of the village resisted, embracing trees to prevent their felling, to safeguard their lifestyles which were dependent on the forests. Deforestation could qualitatively change the lives of all village residents but it was the women who agitated for saving the forests. Organized by a non-governmental organization that Chandi Prasad led, The Chipko movement adopted the slogan "ecology is permanent economy." The women embracing the trees did not tag their action as feminist activism; however as a movement that demonstrated resistance against oppression, it had all the markings of such. It began when Maharaja of Jodhpur wanted to build a new palace in Rajasthan which is India's Himalayan foot hills. While the axemen were cutting the trees, martyr Amrita Devi hugged one of the trees. This is because in Jodhpur each child had a tree that could talk to it. The axe men ignored Devi and after taking she off they cut down the tree.

### **Green Belt Movement**

Another movement, which is one of the biggest in women and environment history, is the Green Belt movement. Nobel Prize winner Wangari Maathai founded this movement on the World Environment Day in June 1977. The starting ceremony was very simple few women planted seven trees in Maathai's backyard. By 2005 30 million trees had been planted by participants in the Green Belt movement on public and private lands. The Green Belt movement aims to bring environmental restoration along with society's economic growth. This movement led by Maathai focused on restoration of Kenya's rapidly diminishing forests as well as empowering the rural women through environmental preservation. This conflict started because men wanted to cut the trees to use them for industrial purposes while women wanted to keep them since it was their food resource and deforestation was a survival matter for local people.

## Conclusion

Environmental education is required for the every citizen for sustainable development . Environmental education will produce change in attitude of the people, as well as impact specific knowledge on the every citizen. This paper has discussed the various ways women have participated actively in environmental protection and natural resource management in order to ensure sustainable use of environmental resources. Women education and access to education for girls should be seen as a policy priority. Educated women will contribute more significantly to bridging the gap between environment and development. Empowerment of women in sustainable human development and in relation to the protection of the environment must be recognized and sustained. The critical role of women, as resource managers, as community activists, as environmental advocates, must be recognized when strategies for the protection of the environment are being developed. To make a significant impact on decision making, women should be present in equal numbers to men (or at least on a 40:60 proportional split of genders). As resource managers, women should be consulted and supported in what they are already doing to protect the environment. Specifically, more women should be involved in decision making with regard to policies programs, or funding of environment.

## References

1. Agrawal B (1998). Neither Sustenance Nor Sustainability- Agricultural Strategies Ecological Degradation and Indian Women In Poverty. In Bina Agrawal (Eds); Structures of Patriarchy. Kali for Women, New Delhi.
2. Agrawal B(2009).Gender and Forest Conservation-Impact of Women's Participation in Community Forest Governance. Ecological Economies, In press.
3. <https://en.wikipedia.org/wiki/Ecofeminism>
4. Mishra A (1978). Chipko Movement: Uttrakhand Women's Bid to save Forest Wealth. People's Action. New Delhi.
5. Mariama A and Henshall J (1995) .Gender and the Environment: Women's Time Use as a Measure of Environment Change. Global environmental Change, Vol .5 P 337.
6. Tolb M (1992). UNEP Changes for Past Two Decades and the Prospects for the Future. UNEP. Our planet Vol. 4(6)PP 8-11.
7. Wenz. Peter S. (2001). Environmental Ethics Today. New York: Oxford University Press.
8. Yamey. Gavin (2012). The Bittersweet Sounds of the Modern Food Chain. Plos Biology. February 2006. Vol.4 (2) PP 165-166.

## शोध प्रज्ञान शोध पत्रिका के सामान्य नियम

1. पत्रिका का सम्पादन, संचालन, प्रकाशन तथा समीक्षक इत्यादि समस्त पद पूर्णतः अवैतनिक है।
2. अन्तर्विषयक शोध पत्रिका 'प्रज्ञान' द्विभाषिक, वार्षिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका है। जिसका उद्देश्य शोध एवं अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करना है। इस हेतु गुणवत्तापूर्ण स्तरीय एवं मानकानुरूप शोध पत्र आमंत्रित है।
3. शोध-पत्रों का प्रकाशन विषय विशेषज्ञों की समीक्षा एवं सहमति तथा सम्पादक मंडल की संस्तुति के आधार पर किया जायेगा किन्तु शोध-पत्रों में वर्णित तथ्यों के प्रति उनके लेखक ही उत्तरदायी होंगे। शोधपत्रों के साथ उनकी मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का घोषणा-पत्र अवश्य संलग्न करें।
4. शोध पत्र के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, सम्पर्क का पता, ई मेल तथा मोबाइल नं. अवश्य भेजें।
5. समस्त प्रकाशित शोध-पत्रों का सर्वाधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित रहेगा। शोध-पत्र में वर्णित विषय-वस्तु अनुचित या विवादित होने की स्थिति में सम्पादक/समीक्षक का निर्णय अन्तिम होगा। शोध-पत्रों में सम्पादक मंडल के विवेकानुसार आंशिक संशोधन भी किया जा सकता है।
6. शोध-पत्रों की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें क्योंकि अस्वीकृत शोध-पत्रों की वापसी सम्भव नहीं है।
7. शोध-पत्र कम्प्यूटर से हिन्दी में Kruti Dev फॉन्ट साइज 14 एवं अंग्रेजी में Times New Roman फॉन्ट साइज 12 में टंकित कराकर एक प्रति हार्ड कॉपी में प्रेषित कर तथा उसकी सॉफ्ट कॉपी ई मेल-journalkmgcbadalpur@gmail.com पर अनिवार्यतः मेल करें।
8. शोध-पत्र में लगभग 150 शब्दों का शोध-सारांश, मुख्य शब्द एवं अन्त में सन्दर्भ अवश्य होने चाहिए। सन्दर्भ में सर्वप्रथम लेखक, पुस्तक व्याख्याकार, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष एवं पेज संख्या क्रमानुसार अंकित होने चाहिए तथा शोध-पत्र 3000 शब्दों की सीमा के अन्तर्गत होना चाहिए।
9. समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

ISSN: 2278-1609

# PRAJÑĀNA (प्रज्ञान)

A Peer Review, Multi Disciplinary Bilingual Research Journal

## INDIVIDUAL/ INSTITUTIONAL

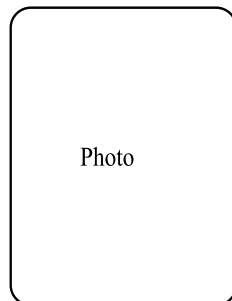
### MEMBERSHIP FORM

1. Name in full (Block letters) .....
2. Date of Birth .....
3. Mailing Address .....  
.....  
.....
4. Phone/Mobile No. ....  
E-mail .....
5. Occupation/Designation .....
6. Place of Work .....
7. Academic Qualifications .....
8. Field of Specialisation .....
9. Category of Membership sought (please put check mark) [ \* ]  
Individual 

<input type="checkbox"/>	(a) One year Membership (Rs. 500/-)	[    ]
<input type="checkbox"/>	(b) Life Membership (Rs. 5000/-)	[    ]

  
Institutional 

<input type="checkbox"/>	(c) One year Membership (Rs. 700/-)	[    ]
<input type="checkbox"/>	(d) Life Membership (Rs. 7000/-)	[    ]
10. Details of Membership fee of Rs..... in cash/MO/Bank Draft/  
(in the name of "Principal KMGGPG College, Badalpur) Cheque No.  
..... Date .....
11. Signature of Applicant .....  
Change in address should be immediately communicated to the Managing Editor.



### FOR THE USE OF OFFICE ONLY

Received a sum of Rs..... from DR/MR/MRS ..... of in Cash/MO/  
Cheque bank Draft No. .... towards membership of the **PRAJÑĀNA**  
Reference of .....

**Editor**

**Note:** Photocopies of the membership form are acceptable.



